श्रीहित चौरासी

(प्रशस्ति)

निगम-अगोचर बात कहा कहौं अतिहि अनौखी।
उभय मीत की प्रीति-रीति चोखी ते चोखी।।
वृन्दावन छवि देखि-देखि हुलसत हुलसावत।
जल-तरंगवत् गौरश्याम विलसत विलसावत।।
ललितादिक निज सहचरी निरखि-निरखि बलि जात नित।
चौरासी हित पद कहे चतुरन कौ यह परम वित।।

-श्रीवृन्दावनदास

मुद्रक :
राधा प्रेस, दिल्ली

श्रीहित चौरासी

(१) राग-विभास-

जोई-जोई प्यारौ करै सोई मोहि भावै[१],
भावै मोहि जोई सोई-सोई करैं प्यारे।
मोकौं तौ भावती ठौर प्यारे के नैंनन में,
प्यारौ भयौ चाहै मेरे नैंनन के तारे।।
मेरे तन-मन-प्राण हूँ ते प्रीतम प्रिय,
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोसौं हारे।
जै श्रीहित हरिवंश हंस-हंसिनी साँवल-गौर,
कहौ कौन करै जल-तरंगनि[२] न्यारे[३]।।

(२)

प्यारे बोली भामिनी[४] आजु नीकी जामिनी[५],
भेंट नवीन मेघ सौं दामिनी[६]।
मोंहन रसिक-राइरी[७] माई, तासौं जु-
मान करै ऐसी कौन कामिनी।
जै श्रीहित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी,
राधिकारमण सौं मिली गज-गामिनी[८]।।

(३)

प्रात समय दोऊ रस लंपट[९],
सुरत-जुद्ध जय-जुत अति फूल[१०]।

१-अच्छा लगता है, २-जल और तरंग को, ३-अलग, ४-मानिनी, ५-रात्रि, ६-बिजली, ७-रसिक शिरोमणि, ८-हाथी जैसी चाल वाली, ९-रसलोभी, १०-प्रेम क्रीड़ा में समान रूप से विजयी होने के कारण अति प्रसन्न।

श्रम-वारिज घनविन्दु[१] वदन पर,
भूषण अंगहि अंग विकूल[२]॥
कछु रह्यौ तिलक शिथिल[३] अलकावलि[४],
वदन[५] कमल मानौं अलि[६] भूल।
जै श्रीहित हरिवंश मदन-रंग रँगि रहे,
नैंन-बैंन कटि शिथिल दुकूल[७]॥

(४)

आजु तौ जुवति तेरौ वदन आनन्द भर्यौ,
पिय के संगम[८] के सूचत सुख-चैन।
आलस- वलित बोल[९] सुरंग[१०] रँगे कपोल,
विथकित[११] अरुण[१२] उनींदे[१३] दोऊ नैंन॥
रुचिर[१४] तिलक-लेश[१५] किरत[१६] कुसुम-केश[१७],
सिर सीमंत[१८] भूषित मानौं तैं[१९] न।
करुणाकर[२०] उदार राखत कछु न सार[२१],
दसन-वसन[२२] लागत जब दैंन॥
काहे कौं दुरत[२३] भीरु, पलटे प्रीतम चीर,
बस किये श्याम सिखै सत मैंन[२४]।

१-पसीने की घनी बूँदें, २-अस्तव्यस्त, ३-ढीले, ४-केश-पाश, ५-मुख, ६-भौंरा, ७-वस्त्र, ८-मिलन, ९-आलसयुक्तवचन, १०-लाल, ११-थकित हुए, १२-लाल, १३-नींद से भरे हुए, १४-सुन्दर, १५-तिलक का थोड़ा सा अंश, १६-गिरते हैं, १७-केशों में गुथे हुए फूल, १८-माँग, १९-तुम, २०-करुणा-सागर, २१-शेष, २२-अधर, २३-छिपाती हैं, २४-सैकड़ों प्रेम क्रीड़ायें,

गलित[1] उरसि माल[2], सिथिल किंकिनी जाल[3],
जै श्रीहित हरिवंश लता-गृह[4] सैंन।।

(५)

आजु प्रभात लता-मन्दिर में,
सुख बरसत अति हरखि[5] युगल वर।
गौर श्याम अभिराम[6] रंगभरे,
लटकि-लटकि पग धरत अवनि[7] पर।।
कुच-कुमकुम[8] रंजित[9] मालावलि,
सुरत नाथ[10] श्रीश्याम धाम[11] धर।
प्रिया प्रेम के अंक[12] अलंकृत[13],
चित्रित चतुर-शिरोमनि निजकर[14]।।
दम्पति[15] अति अनुराग मुदित[16] कल[17],
गान करत मन हरत परस्पर[18]।
जै श्रीहित हरिवंश प्रसंश-परायन[19],
गायन अलि सुर देत मधुर तर।।

(६)

कौन चतुर जुवती प्रिया,
जाहि मिलत लाल चोर ह्वै रैन।

१-टूट गई, २-हृदय पर धारण की हुई माला, ३-घुँघुरू युक्त करधनी, ४-लता-मन्दिर। ५- प्रसन्न होकर, ६- सुन्दर, ७- भूमि, ८-रोली, ९-रँगी हुई, १०-रसिक-शिरोमणि, ११-हृदय, १२-चिह्न, १३-सुशोभित, १४-अपने हाथ से, १५-युगल, १६-प्रसन्न, १७-सुन्दर, १८- एक दूसरे का, १९- प्रशंसा से पूर्ण हृदय वाली,

दुरवत क्यौंऽव दुरै[१] सुनि प्यारे,
रंग[२] में गहिले[३] चैंन में नैन॥
उर नख-चंद्र[४] विराने[५],
पट[६] अटपटे से बैन।
(जै श्री) हित हरिवंश रसिक-
राधापति प्रमथित[७] मैन[८]॥

(७) राग-विलावल

आजु निकुंज मंजु में खेलत,
नवल किसोर नवीन किसोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर,
सुनि अभूत[९] भूतल[१०] पर जोरी॥
विद्रुम[११] फटकि[१२] विविध[१३] निर्मित[१४] धर[१५],
नव कर्पूर पराग न थोरी।
कोमल किसलय[१६] सयन सुपेसल[१७],
तापर श्याम निवेसित[१८] गोरी॥
मिथुन[१९] हास-परिहास परायन,
पीक कपोल कमल पर झोरी[२०]।

१-छिपाये से क्यों छिपे, २-अनुराग, ३-भीजे हुए, ४- हृदय पर नख के चिह्न, ५. दूसरे के, ६- वस्त्र, ७-व्याकुल, ८-काम, ९-नवीन, १०- पृथ्वी, १२-मूँगा, १३-स्फटिक मणि (सफेद रंग की), १४-बहुत प्रकार के, १५-बनी हुई १६-भूमि, १७-कौंपल, १७-कोमल, १८-विराजमान की, १९-युगल, श्यामा-श्याम, २०-पीक लगे कपोल ऐसे मालुम होते हैं जैसे कमल पर झोल, (मुलम्मा) चढ़ा दिया हो।

गौर-श्याम भुज कलह मनोहर,
नीवी-बंधन[१] मोचत[२] डोरी।।
हरि-उर-मुकुर[३] विलोकि अपनपौ[४],
विभ्रम[५] विकल मान-जुत भोरी[६]।
चिबुक[७] सुचारु प्रलोइ[८] प्रबोधत[९],
पिय-प्रतिविंब जनाय निहोरी[१०]।।
नेति-नेति बचनामृत सुनि-सुनि,
ललितादिक देखत दुरि चोरी।
जै श्रीहित हरिवंश करत कर-धूनन[११],
प्रणयकोप[१२] मालावलि तोरी।।

(८)

अति ही अरुन तेरे नैंन नलिन[१३] री।
आलस-जुत इतरात रँगमगे,
भये निशि जागर[१४] मखिन[१५] मलिन री।।
सिथिल पलक में उठत गोलक[१६] गति,
विंधयौ[१७] मोहन मृग सकत चलि न री।
जै श्रीहित हरिवंश हंसकल गामिनि,
संभ्रम[१८] देत भ्रमरन अलिन[१९] री।।

१-कटिबंधन, २- खोलते हैं, ३- दर्पण, ४-अपना प्रतिविम्ब(परछाईं), ५-भ्रम, ६-श्रीराधा, ७- ठोड़ी, ८- सहलाकर, ९-समझाते हैं, १०-नम्र प्रार्थना, ११-हाथ झड़काना, १२- प्रेम का क्रोध, १३-कमलनी, १४-जागने से, १५-काजल से, १६-तारा (आँखों का), १७-वेध दिया, १८-भ्रम, १९-सखियों को।

(९)

बनी श्रीराधा मोहन की जोरी।
इन्द्रनीलमनि[१] श्याम मनोहर, सातकुम्भ[२] तनु गोरी।।
भाल विशाल तिलक हरि, कामिनि चिकुर[३] चंद्र[४] बिच रोरी।
गज-नायक प्रभु चाल, गयंदनि-गति[५] वृषभानु किसोरी।।
नील निचोल[६] जुवति, मोहन पट पीत[७] अरुण सिर खोरी[८]।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति, सुरत रंग[९] में बोरी[१०]।।

(१०)

आजु नागरी-किशोर भाँवती[११] विचित्र जोर[१२],
कहा कहौं अंग-अंग परम माधुरी।
करत केलि[१३] कंठ मेलि बाहुदंड[१४], गंड-गंड[१५],
परस[१६], सरस रास-लास[१७] मंडली जुरी।।
श्यामसुन्दरी बिहार, बाँसुरी मृदंग तार[१८],
मधुर घोष[१९] नूपुरादि किंकिनी चुरी[२०]।
जै श्री देखत हरिवंश आलि, निर्तनी सुधंग[२१] चाल,
वारि फेर देत[२२] प्राण देहसौं दुरी[२३]।।

१-गहरे नीले रंग की मणि, २-सोना, ३-बाल, ४-चन्द्रिका, ५- हथिनी जैसी चाल, ६- आच्छादन वस्त्र, ७-पीला, ८-पाग, ९-प्रेमरंग, १०-रँगी हुई ११-मन को रुचिकर लगने वाली, १२- जोड़ी, १३-क्रीड़ा, १४-एक दूसरे के कण्ठ में हाथ डालकर, १५-एक दूसरे के कपोल, १६-स्पर्श करके, १७-नृत्य, १८-तार के बाजे, सारंगी आदि, १९-शब्द, २०-चूड़ी, २१-सुधंग नृत्य की, २२-न्यौछावर कर देती है, २३-शरीर से छिपी हुई (लता भवन की ओट में)।

(११)

मंजुल कल कुंज देश, राधा हरि विशद[१] वेश,
राका[२] नभ[३] कुमुद-बंधु[४] शरद जामिनी।
साँवल दुति[५] कनक अंग[६], बिहरत मिलि एक संग,
नीरद[७] मनौ नील मध्य लसत दामिनी।।
अरुण पीत नव दुकूल, अनुपम अनुराग मूल,
सौरभयुत[८] शीत अनिल[९] मंद गामिनी[१०]।
किसलय दल रचित शैन, बोलत पिय चाटु बैन[११],
मान सहित प्रतिपद[१२] प्रतिकूल कामिनी।।
मोहन मन मथत मार[१३], परसत कुच-नीवि-हार,
वेपथयुत[१४] नेति-नेति बदत[१५] भामिनी।
नर वाहन प्रभु सुकेलि, बहुविध भर[१६] भरत झेलि[१७],
सौरत रस[१८] रूप नदी जगत-पावनी[१९]।।

(१२)

चलहि राधिके सुजान, तेरे हित सुख निधान,
रास रच्यौ श्याम तट कलिंद-नन्दिनी[२०]।
निर्त्तत युवती समूह, राग रंग अति कुतूह[२१],
बाजत रसमूल मुरलिका अनन्दिनी।।

१-सुन्दर, २-पूर्णिमा, ३- आकाश, ४- चन्द्रमा, ५-श्री श्याम सुन्दर, ६-गोरे अंग, श्रीराधा ७-मेघ, बादल, ८-सुगंध युक्त ९-पवन, १०- मन्द गति से चलने वाली, ११-खुशामद के बचन, १२- हर क्रिया में, १३-प्रेम मय काम, १४-कंप युक्त, १५- बोलती हैं, १६-प्रेम का भार, १७-झेलते हैं, १८-श्रृंगार रस, १९-पवित्र करने वाली, २०-यमुनाजी, २१-कौतूहलपूर्ण,

वंशीवट निकट जहाँ, परम रमनि[१] भूमि तहाँ,
सकल सुखद मलय[२] बहै वायु मन्दिनी।
जाती[३] ईषद[४] विकास, कानन[५] अतिसय सुवास,
राका निशि[६] सरद मास विमल चंदिनी।।
नरवाहन प्रभु[७] निहारि, लोचन भरि घोष-नारि[८],
नख-सिख सौन्दर्य काम-दुख-निकन्दिनी[९]।
विलसहु भुज ग्रीव मेलि, भामिनि सुख-सिंधु झेलि,
नव निकुंज श्याम केलि[१०], जगत-वन्दिनी[११]।।

(१३)

नन्द के लाल हर्‌यौ मन मोर।
हौं अपने मोतिन-लर पोवत,
काँकर डारि गयौ सखि भोर।।
बंक विलोकनि चाल छबीली,
रसिक-सिरोमनि नन्द-किसोर।
कहि कैसैं मन रहत श्रवन सुनि,
सरस मधुर मुरली की घोर[१२]।।
इंदु[१३] गोविन्द वदन के कारन,
चितवन कौं भये नैंन चकोर।

१-रमणीय, सुन्दर, २-चन्दन की गंध युक्त, ३-चमेली, ४-थोड़ा-सा, ५-श्री बृन्दावन, ६-पूर्णिमा की रात्रि, ७-श्री श्यामसुन्दर, ८-श्री बृषभानु नन्दिनी, ९-नाश करने वाली, १०- शृंगार क्रीड़ा, ११-नमस्कार करने योग्य, १२-तीव्र ध्वनि, १३-चन्द्रमा।

जै श्री हित हरिवंश रसिक रस जुवती,
तू लै मिलि सखि प्रान अकोर[१]।।

(१४) राग-टोडी

अधर अरुण तेरे कैसे कै दुराऊँ[२]।
रवि ससि संक[३] भजन कियौ अपवस[४],
अद्भुत रंगन कुसुम बनाऊँ।।
सुभ कौसेय[५] कसिव[६] कौस्तुभमनि[७],
पंकज-सुतन[८] लै अंगनु लुपाऊँ[९]।
हरषित इंदु तजत जैसे जलधर[१०],
सो भ्रम ढूँढ़ि कहाँ हौं पाऊँ।।
अम्बुन[११] दम्भ[१२] कछू नहीं व्यापत,
हिमकर[१३] तपै ताहि कैसें कै बुझाऊँ।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक नवरंग[१४] पिय,
भृकुटी भौंह तेरे खंजन लराऊँ[१५]।।

(१५)

अपनी बात मोसौं कहि री भामिनी,
औंगी मौंगी[१६] रहत गरव[१७] की माती[१८]।
हौं तोसौं कहत हारी, सुनिरी राधिका प्यारी,
निशि कौ रंग क्यौं न कहत लजाती।।

१-भेंट, २-छिपाऊँ, ३-शंका, ४-अपने वश, ५-रेशमी वस्त्र, ६-कसकर, ७-वह मणि जिसे श्यामसुन्दर अपने वक्षस्थल पर सदैव धारण करते हैं, ८-पराग, ९-छिपाऊँ, १०-बादल, ११-जल, १२-छल, १३- चन्द्रमा, १४-नवीन रंग, १५-समता करूँ, १६-गुमसुम, १७-अभिमान, १८-मत्त।

गलित कुसुम बैनी, सुनिरी सारंग-नैंनी[१],
छूटी लट अचरा[२] बदत[३] अलसाती।
अधर निरंग[४] रंग रच्यौरी कपोलन,
जुवति चलत गजगति अरुझाती[५]॥
रहसि[६] रमी[७] छबीले, रसन वसन[८] ढीले,
शिथिल कसनि कंचुकी[९] उर राती[१०]।
सखी सौं सुनि श्रवन वचन मुदित मन ,
चली हरिवंश भवन मुसिकाती।

(१६)

आजु मेरे कहे चलौ मृगनैंनी।
गावत सरस जुवति मंडल में,
पिय सौं मिलैं भलैं पिकबैनीं[११]॥
परम प्रवीन कोक-विद्या[१२] में,
अभिनय[१३] निपुन लाग-गति[१४] लैनी।
रूपरासि सुनि नवल किशोरी,
पल-पल घटत चाँदनी रैनी॥
(जै श्री) हित हरिवंश चली अति आतुर,
राधारवन सुरत सुखदैनी।
रहसि रभस[१५] आलिंगन चुम्बन,
मदन कोटि कुल भई कुचैनी[१६]॥

१-मृगनैनी, २-अंचल, ३-बोलने में, ४-रंग शून्य, ५-उलझी हुई, ६-एकांत, ७-क्रीड़ा की, ८-वस्त्र, ९-चोली, १०-लाल, ११- कोकिल जैसे मीठे स्वर वाली, १२- शृंगार रस की कलाएँ, १३-अंगों द्वारा भाव प्रदर्शन, १४-नृत्य गति, १५-वेग पूर्वक, १६-बेचैनी।

(१७)

आजु देखि ब्रजसुन्दरी मोहन बनी केलि[१]।
अंस-अंस[२] बाहु दै, किशोर जोर रूप रासि,
मनौ तमाल अरुझि रही सरस कनक बेलि।
नव निकुञ्ज भ्रमर गुञ्ज, मंजु घोष प्रेम पुञ्ज,
गान करत मोर पिकन अपने सुर सों मेलि[३]।
मदन मुदित अङ्ग-अङ्ग, बीच-बीच सुरत रंग,
पल-पल हरिवंश पिवत नैंन चषक[४] झेलि।।

(१८) राग-आसावरी

सुनि मेरौ बचन छबीली राधा।
तैं पायौ रससिंधु अगाधा।।
तू वृषभानु गोप की बेटी।
मोहनलाल रसिक हँसि भेटी।।
जाहि बिरंचि[५] उमापति[६] नाये[७]।
तापै तैं वन-फूल बिनाये।।
जो रस नेति-नेति श्रुति भाख्यौ[८]।
ताकौ तैं अधर सुधा रस चाख्यौ।।
तेरौ रूप कहत नहिं आवै।
(जै श्री) हित हरिवंश कछुक जस गावै।।

१-ब्रजसुन्दरी श्रीराधा और मोहन की क्रीड़ा, २-कन्धों पर, ३-मोर और कोकिल के स्वरों को अपने स्वर में मिलाकर, ४-प्याला (पान-पात्र), ५-ब्रह्मा, ६-शंकर, ७-नमस्कार किया, ८-कहा है,

(१९)

खेलत रास रसिक ब्रज-मण्डन[१],
जुवतिन अंस दिये भुज दण्डन।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजै,
मधुर-मधुर मुरली कल बाजै।
अति राजत घनश्याम तमाला,
कंचन-बेलि बनी ब्रजबाला।
बाजत ताल मृदंग उपंगा,
गान मथत मन कोटि अनंगा।
भूषन बहुत विविध रंग सारी,
अंग सुधंग[२] दिखावत नारी।
बरसत कुसुम मुदित सुरयोषा[३],
सुनियत दिवि[४] दुंदुभि[५] कल घोषा[६]।
(जै श्री) हित हरिवंश मगन मन श्यामा।
राधारवन सकल सुख धामा।।

(२०) राग-धनाश्री

मोहनलाल के रसमाती।
वधू गुपत-गोवत[७] कत मोसौं, प्रथम नेह सकुचाती।।
देख सँभार पीत पट ऊपर, कहाँ चूनरी राती।
टूटी लर लटकत मोतिन की, नख बिधु[८] अंकित छाती।।

१-शोभा, २-नृत्य विशेष, ३-देव स्त्रियाँ, ४-आकाश, ५-नगाड़े, ६-सुन्दर उच्च स्वर, ७-आग्रह पूर्वक छिपाती हैं, ८-नख चन्द्र।

अधर-बिंब[१] खंडित[२], मखि[३] मंडित गंड, चलत अरुझाती।
अरुन नैंन घूमत आलस जुत, कुसुत गलित लटपाती[४]।।
आजु रहसि मोहन सब लूटी, विविधि आपुनी थाती[५]।
(जैश्री) हित हरिवंश वचन सुनि भामिनि, भवन चली मुसिकाती।।

(२१)

तेरे नैंन करत दोऊ चारी[६]।
अति कुलकात समात नहीं,
कहुँ मिले हैं कुञ्जबिहारी।।
बिथुरी माँग, कुसुम गिरि-गिरि परैं,
लटकि रही लट न्यारी।
उर नख-रेख प्रगट देखियत है,
कहा दुरावत प्यारी।।
परी है पीक सुभग गंडन पर,
अधर निरंग सुकुमारी।
(जै श्री) हित हरिवंश रसिकनी भामिनि,
आलस अँग-अँग भारी।।

(२२)

नैंनन पर वारौं कोटिक खंजन।
चंचल चपल अरुन अनियारे[७] अग्रभाग बन्यौ अञ्जन।।

१-लाल रंग के अधर, २-क्षत-विक्षत, ३-काजल, ४-केशों की लटें, ५-धरोहर, ६-चाड़ी, चुगली, ७-पैने।

रुचिर मनोहर वक्र बिलोकन सुरत-समर-दल-गंजन[१]।
(जैश्री) हित हरिवंश कहत न बनैं छबि सुखसमुद्र-मनरंजन[२]॥

(२३)

राधा प्यारी तेरे नैंन सलोल[३]।
तैं निज भजन[४] कनक तन जोवन, लियौ मनोहर मोल॥
अधर निरङ्ग अलक लट छूटी, रंजित पीक कपोल।
तू रस मगन भई नहिं जानत, ऊपर पीत निचोल॥
कुच युग पर नख-रेख प्रगट मानौं संकर सिर ससि-टोल[५]।
जै श्री हित हरिवंश कहत कछु भामिनि अति आलस सों बोल॥

(२४)

आजु गोपाल रास रस खेलत,
पुलिन[६] कल्पतरु तीर री सजनी।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजत,
रोचक त्रिविधि[७] समीर री सजनी॥
चंपक बकुल मालती मुकुलित[८],
मत्त मुदित पिक कीर री सजनी।
देसी सुधंग राग रँग नीकौ,
ब्रज-जुवतिन की भीर री सजनी॥

१-प्रेम-युद्ध में विजय प्राप्त कराने वाले, २-सुख समुद्र रूप श्रीश्यामसुन्दर का मन रंजन करने वाले, ३-चंचल, ४-प्रेम, ५-समूह, ६-यमुना तट, ७-तीन प्रकार की शीतल, मंद, सुगन्ध, ८-खिल गये।

मघवा[१] मुदित निसान[२] बजायौ,
व्रत छाँड़्यौ मुनि धीर री सजनी।
जै श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा,
हरत मदन घन पीर[३] री सजनी॥

(२५)

आजु नीकी बनी राधिका नागरी।
ब्रज-जुवति-जूथ[४] में रूप अरु चतुरई,
सील सिंगार गुन सबन तें आगरी[५]॥
कमल दक्षिण भुजा, वाम भुज अंस सखि,
गावती सरस मिलि मधुर स्वर राग री।
सकल विद्या विदित, रहसि हरिवंश हित,
मिलत नवकुञ्ज वर श्याम बड़भागरी॥

(२६)

मोहनी मदन गोपाल की बाँसुरी।
माधुरी स्रवन पुट सुनत, सुनि राधिके!
करत रति राज के ताप कौ नासु री॥
सरद राका रजनि[६], विपिन वृन्दा सजनि[७],
अनिल अति मंद सीतल सहित बासुरी[८]।
परम पावन पुलिन, भृङ्ग-सेवित नलिन,
कल्पतरु तीर बलबीर[९] कृत रासु री॥
सकल मंडल भलीं तुम जु हरिसों मिलीं,
बनी वर बनित[१०] उपमा कहौं कासु री।

१-इन्द्र, २-नगाड़े, ३-पीड़ा, ४-समूह, ५-श्रेष्ठ, ६-रात्रि, ७-सखी, ८-सुगन्ध युक्त, ९-श्याम सुन्दर, १०-बानक।

तुम जु कंचनतनी, लाल मर्कतमनी,
उभै[१] कल हंस हरिवंश बलि दासु री॥

(२७) राग-बसंत

मधुऋतु वृन्दावन आनन्द न थोर[२]।
राजत नागरी नव कुशल किशोर॥
जूथिका[३] जुगल रूप[४] मञ्जरी रसाल[५]।
विथकित[६] अलि[७] मधुमाधवी[८] गुलाल[९]॥
चंपक बकुल[१०] कुल विविध सरोज[११]।
केतकी मेदिनी मद[१२] मुदित मनोज[१३]॥
रोचक रुचिर बहै त्रिविध समीर।
मुकुलित नूत[१४] नदत[१५] पिक-कीर॥
पावन पुलिन घन मंजुल निकुञ्ज।
किसलय सैन रचित सुख-पुञ्ज॥
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग।
बाजत उपंग वीणा वर मुख चंग॥
मृगमद[१६] मलयज[१७] कुंकुम अबीर।
बंदन अगरसत[१८] सुरँगित[१९] चीर॥

१-दोनों, २-बहुत, ३-चमेली, ४-स्वेत और पीत दो प्रकार की, ५-आम, ६-थके हुए, ७-भौंरा, ८-मधुर माधवी लता, ९-पराग, १०-मौलिश्री (मोरछली), ११-कमल, १२-मकरन्द, १३-कामदेव, १४-आम्र, १५-शब्द करते हैं, १६-क़स्तूरी, १७-चन्दन, १८-चोबा, १९-रँग गये।

गावत सुन्दरि-हरि सरस धमार।
पुलकित[१] खग-मृग बहत न वारि॥
जै श्रीहित हरिवंश हंस-हंसिनी समाज।
ऐसे ही करौ मिलि जुग-जुग राज॥

(२८)

राधे देखि वन की बात[२]।
ऋतु बसन्त अनंत मुकुलित कुसुम अरु फल पात॥
वेनु धुनि नंदलाल बोली[३], सुनि व क्यों अरसात।
करत कतव[४] विलम्ब भामिनि, वृथा औसर[५] जात॥
लाल मर्कतमनि छबीलौ, तुम जु कंचन गात।
बनी हित हरिवंश जोरी, उभय गुन-गन-मात[६]॥

(२९) राग-देवगंधार

ब्रज नव तरुनि-कदम्ब[७] मुकुटमनि श्यामा आजु बनी।
नखसिख लौं अँग-अंग माधुरी मोहे श्याम धनी॥
यौं राजत कवरी[८] गूँथित कच[९] कनक-कंज-वदनी[१०]।
चिकुर चंद्रिकन[११] बीच अर्ध बिधु[१२] मानौं ग्रसित फनी[१३]॥
सौभग[१४] रस सिर स्रवत पनारी[१५], पिय सीमन्त[१६] ठनी[१७]।
भृकुटि काम-कोदंड[१८], नैंन-सर, कज्जल रेख अनी॥
तरल[१९] तिलक, ताटंक[२०] गंड पर, नासा जलज[२१] मनी।
दसन कुन्द, सरसाधर पल्लव प्रीतम मन समनी[२१]॥

१-रोमांचित, २-लीला, ३-बुलाई, ४-क्यों, ५-अवसर, ६-श्यामा-श्याम दोनों एक दूसरे के गुण-गण से मात हैं, पराजित हैं, ७-समूह, ८-वेणी, ९-बाल, १०-स्वर्ण कमल के समान मुख वाली, ११-बालों की बनी चन्द्रिका, १२-चन्द्रमा, १३-राहु, १४-सुहाग, १५-नाली, १६-माँग, १७-रची है, १८-धनुष, १९-सीधा, २०-कर्ण भूषण, २१-मोती, २१-शान्ति प्रदान करने वाली।

चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि, साँवल बिंदुकनी।
प्रीतम प्रान रतन संपुट[१] कुच, कंचुकि कसिब तनी[२]॥
भुज-मृनाल[३] बल हरत बलय[४] जुत परस[५] सरस स्रवनी[६]।
श्याम सीस तरु मनु मिडवारी[७] रची रुचिर रवनी॥
नाभि गंभीर मीन मोहन मन खेलन कौं हृदनी[८]।
कृस कटि, पृथु नितम्ब किंकिनि व्रत[९], कदलि-खंभ जघनी॥
पद अम्बुज जावक जुत, भूषन प्रीतम उर अवनी।
नव-नव भाय विलोभि भाम इभ[१०], बिहरत वर करिनी॥
(जै श्री) हित हरिवंश प्रसंसत श्यामा कीरत विसद घनी।
गावत, स्रवनन सुनत सुखाकर, विश्व दुरित[११] दवनी[१२]॥

(३०)

देखत नवनिकुञ्ज सुनि सजनी लागत है अति चारु[१३]।
माधविका केतुकी लता लै, रच्यौ मदन आगारु[१४]॥
सरद मास, राका निशि, सीतल मन्द-सुगन्ध-समीर।
परिमल[१५] लुब्ध मधुब्रत[१६] विथकित, नदत कोकिला-कीर॥
बहुविधि रंग मृदुल किसलय दल, निर्मित पिय सखि सेज।
भाजन कनक विविध मधुपूरित, धरे धरनि पर हेज[१७]॥

१-डिब्बा, २-कसकर बँधी हुई है, ३-कमल की डंडी, ४-चूड़ी, ५-स्पर्श, ६-श्रवित करने वाली, ७-वृक्ष का थामला, जो उसके मूल के चारों ओर पानी भरने के लिए बनाया जाता है, ८-सरोवर, ९-घिरे हुए, १०-हाथी, ११-पाप, १२-दमन करने वाली, १३-सुन्दर, १४-घर, १५-पराग, १६- भौंरा, १७-सावधानी पूर्वक।

तापर कुसल किसोर-किसोरी करत हास-परिहास।
प्रीतम पानि उरज वर परसत, प्रिया दुरावत वास[1]।।
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकत दिन प्रतिपद प्रतिकूल।
आतुर अति अनुराग विवस हरि धाइ धरत भुज-मूल[2]।।
नागर नीबी-बन्धन मोचत ऐंचत नील निचोल।
वधू, कपट हठ कोप कहत कल नेति-नेति[3] मधुबोल[4]।।
परिरम्भन विपरित रति वितरत सरस सुरत निजुकेलि।
इन्द्रनील मनिमय तरु मानौं लसत कनक की बेलि।।
रतिरन मिथुन ललाट पटल पर श्रमजल-सीकर[5] संग।
ललितादिक अंचल झकझोरत मन अनुराग अभंग।।
(जै श्री) हित हरिवंश यथामति बरनत कृष्ण-रसामृत-सार[6]।
स्रवन सुनत प्रापक रति राधा-पद-अम्बुज सुकुमार।।

(३१)

आज अति राजत दंपति भोर।
सुरत रंग के रस में भीने नागरि-नवल किसोर।।
अंसन पर भुज दिये विलोकत इन्दुबदन विवि ओर।
करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर।।
छूटी लटन लाल मन करष्यौ[7] ये याके चित चोर।
परिरम्भन-चुम्बन मिल गावत सुर मंदर कलघोर।।
पग डगमगत चलत वन बिहरत रुचिर कुञ्ज घनखोर[8]।
(जै श्री) हित हरिवंश लाल-ललना मिलि हियौ सिरावत[9] मोर।।

१-वस्त्र, २-अंस (कंधा), ३-नाहीं नाहीं, ४-अमृत मय वचन, ५-कण, ६-श्रृंगार रस रूपी अमृत का सार, ७-आकर्षित किया, ८-सघन गली, ९-शीतल करते हैं।

(३२)

आजु वन क्रीड़त श्यामा-श्याम ।
सुभग बनी निशि शरद चाँदनी, रुचिर कुञ्ज अभिराम ॥
खंडन अधर करत परिरम्भन[१] ऐंचत जघन दुकूल।
उर नख-पात तिरीछी चितबन, दंपति रस समतूल[२]॥
वे भुज पीन पयोधर परसत, वामदृशा[३] पिय हार।
बसनन पीक, अलक आकर्षत, समर-स्रमित[४] सतमार॥
पल-पल प्रबल चौंप रस-लम्पट, अति सुन्दर सुकुमार।
(जै श्री) हित हरिवंश आजु तृण टूटत, हौं बलि विसद बिहार॥

(३३)

आजु वन राजत जुगल किसोर।
नन्दनँदन वृषभानुनन्दिनी उठे उनीदे भोर॥
डगमगात पग परत, सिथिल गति, परसत[५] नख-ससि-छोर[६]।
दसन-वसन[७] खण्डित, मषि मंडित गंड, तिलक कछु थोर॥
दुरत न कच-करजन[८] के रोके अरुन नैंन अलिचोर।
(जै श्री)हित हरिवंश सँभार न तन-मन सुरत-समुद्र[९] झकोर॥

(३४)

वन की कुञ्जन-कुञ्जन डोलन।
निकसत निपट[१०] साँकरी बीथिन परसत नाहि निचोलन॥

१-आलिंगन, २-समान बलशाली, ३-सुन्दर नेत्रों वाली श्रीराधा, ४-थक गये, ५-भूमि से स्पर्श होता है, ६-चरण-नख रूपी चन्द्रमाओं के सिरों का, ७-अधर, ८-बालों की लट रूपी अँगुलियाँ, ९-प्रेम-सागर, १०-अत्यन्त।

प्रात काल रजनी सब जागे सूचत सुख दृग लोलन।
आलसवन्त अरुण अति व्याकुल कछु उपजत गति गोलन[१]॥
निर्त्तन भृकुटि बदन अम्बुज मृदु सरस हास मधु बोलन।
अति आसक्त लाल अलि लम्पट बस कीने बिनु मोलन॥
बिलुलित[२] सिथिल श्याम छूटी लट राजत रुचिर कपोलन।
रति विपरित चुम्बन परिरम्भन चिबुक चारु टक टोलन[३]॥
कबहुँ स्रमित किसलय सिज्या पर मुख अंचल झक झोलन[४]।
दिन हरिवंश दासि हिय सींचत वारिध[५] केलि कलोलन[६]॥

(३५)

झूलत दोऊ नवल किसोर।
रजनी-जनित[७] रंग सुख सूचत अंग-अंग उठि भोर॥
अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंदर कल घोर[८]।
बीच-बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नैंन की कोर॥
अबला अति सुकुमार डरत मन वर हिंडोर झकोर।
पुलकि-पुलकि प्रीतम उर लागत दै नव उरज अँकोर[९]॥
अरुझी विमल माल कंकन सौं कुण्डल सौं कच डोर।
वेपथ जुत क्यौं बनैं विवेचत[१०] आनँद बढ्यौ न थोर॥
निरखि-निरखि फूलत ललितादिक विविमुख[११] चन्द्रचकोर।
दै असीस हरिवंश प्रसंसत करि अञ्चल की छोर॥

१-नेत्रों की पुतली, २-मसली हुई, ३-सहलाना, ४-अंचल के द्वारा पवन करना, ५-समुद्र, ६-तरंगों से, ७-रात की क्रीड़ा से उत्पन्न, ८-तीव्र स्वर, ९-आलिंगन, १०-सुलझाना, ११-दोनों के मुख।

राग-सारंग

(३६)

आज वन नीकौ रास बनायौ।
पुलिन पवित्र सुभग यमुना-तट मोहन बेनु बजायौ।।
कल कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि खग[१] मृग सचु[२] पायौ।
जुवतिनु मण्डल मध्य श्याम घन सारँग राग जमायौ।।
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस-सिंधु बढ़ायौ।
विविध विसद वृषभानु नन्दिनी अङ्ग सुधंग[३] दिखायौ।।
अभिनय-निपुन लटकि लट लोचन भृकुटि अनंग नचायौ।
तत्ताथेई धरत नूतन गति, पति ब्रजराज रिझायौ।।
सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुखवारिद[४] बरसायौ।
परिरम्भन चुम्बन आलिंगन उचित जुवति जन पायौ।
बरसत कुसुम मुदित नभनायक इन्द्र निसान बजायौ।
(जै श्री)हित हरिवंश रसिक राधापति जस-वितान[५] जग छायौ।।

(३७)

चलहि किन मानिनि कुञ्ज कुटीर।
तो बिनु कुँवर कोटि बनिता-जुत मथत मदन की पीर।।
गद-गद सुर, विरहाकुल, पुलकित, स्रवत बिलोचन नीर।
क्वासि-क्वासि[६] वृषभानु नन्दिनी,बिलपत[७] विपिन अधीर।।
वंशी विसिख[८], व्याल[९] मालावलि, पंचानन[१०] पिक कीर।
मलयज[११] गरल[१२], हुतासन[१३] मारुत[१४], साखामृगरिपु[१५] चीर[१६]।।

१-पक्षी, २-सुख, ३-नृत्य विशेष, ४-आनन्द का मेघ, ५-कीर्ति का मण्डप, ६-कहाँ हो-कहाँ हो, ७-विलाप करते हैं, ८-बाण, ९-सर्प, १०-सिंह, ११-चन्दन, १२-विष, १३-अग्नि, १३-पवन, १५-बन्दर की शत्रु चिरचेंटा घास (अपामार्ग की मञ्जरी), १६-वस्त्र।

(जै श्री) हित हरिवंश परम कोमल चित चपल चली पिय तीर।
सुनि भयभीत बज्र कौ पंजर[१] सुरत - सूर रणधीर॥

(३८)

बेगि चलहि उठि गहर[२] करत कत[३] निकुञ्ज बुलावत लाल।
हा राधा-राधिका पुकारत निरखि मदन गज ढाल[४]॥
करत सहाय सरद ससि मारुत, फूटि मिली[५] उर माल।
दुर्गम तकत[६] समर अति कातर, करहि न पिय प्रतिपाल॥
(जै श्री) हित हरिवंश चली अति आतुर स्रवन सुनत तेहि काल।
लै राखे गिरि-कुच बिच सुन्दर सुरत-सूर ब्रज बाल॥

(३९)

खेल्यौ लाल चाहत रवन[७]।
रचि-रचि अपने हाथ सँवारयौ निकुञ्ज भवन॥
रजनी सरद मंद सौरभ सौं[८] सीतल पवन।
तो बिनु कुँवरि काम की वेदन मेटव कवन॥
चलहि न चपल बाल-मृगनैंनी तजिव मवन[९]।
(जैश्री) हित हरिवंश मिलव प्यारे की आरति-दवन[१०]॥

(४०)

बैठे लाल निकुञ्ज भवन।
रजनी रुचिर, मल्लिका[११] मुकुलित, त्रिविध पवन॥

१-अत्यन्त धीर (श्याम सुन्दर), २-देर, ३-क्यों, ४-झुकाव, ५-विपक्ष में मिल गई, ६-दुरूह स्थान को ढूँढ़ रहे हैं, ७-प्रेम-क्रीड़ा, ८-सुगन्ध के भार से मन्द, ९-मौन, १०-दुख का नाश करने वाली, ११-रायबेल, मोंगरा।

तू सखि काम केलि, मनमोहन मदन-दवन।
वृथा गहर कत करत कृसोदरि[१] कारन कवन।।
चपल चली तन की सुध बिसरी सुनत श्रवन।
(जै श्री)हित हरिवंश मिले रस-लंपट[२] राधिका रवन।।

(४१)

प्रीति की रीति रँगीलौई[३] जानै।
जद्यपि सकल लोक चूड़ामणि दीन अपनपौ[४] मानै।।
यमुना पुलिन निकुञ्ज भवन में मान मानिनी ठानै।
निकट नवीन कोटि कामिनि कुल, धीरज मनहि न आनै।।
नस्वर[५] नेह चपल मधुकर ज्यौं आन-आन सौं बानै[६]।
(जै श्री)हित हरिवंश चतुर सोई लालहिं, छाँड़ि मैंड़[७] पहिचानै।।

(४२)

प्रीति न काहू की कानि[८] विचारै।
मारग अपमारग विथकित मन को अनुसरत[९] निवारै[१०]।।
ज्यौं सरिता[११] सावन जल उमगत सनमुख सिन्धु सिधारै[१२]।
ज्यौं नादहि[१३] मन दिये कुरंगन[१४] प्रगट पारधी[१५] मारै।।
(जै श्री)हित हरिवंश हिलग[१६] सारंग[१७] ज्यौं सलभ[१८] सरीरहि जारै।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु कौन अपनपौ हारै।।

१-पतली कमर वाली, २-लोभी, ३-रँगा हुआ ही, ४-स्वयं को, ५-नाशवान, ६-प्रीति करता है, ७-मर्यादा, ८-कुमार्ग, ९-चलने से, १०-रोके, ११-नदी, १२-जाती है, १३-गान, १४-हिरण, १५-बधिक, १६-प्रीति, १७-दीपक, १८-पतंग।

(४३)

अति नागरि वृषभानु किसोरी।
सुनि दूतिका चपल मृगनैंनी,
आकर्सत चितवत चित गोरी।।
श्रीफल उरज कंचन-सी देही,
कटि केहरि, गुण-सिंधु-झकोरी।
बैंनी भुजँग[१], चन्द्रसत बदनी[२],
कदलि[३] जंघ, जलचर[४] गति चोरी।।
सुनि हरिवंश आज रजनीमुख[५],
बन मिलाइ मेरी निज जोरी।
यद्यपि मान समेत भामिनी,
सुनि कत रहत भली जिय भोरी।।

(४४)

चलि सुन्दरि, बोली वृन्दावन।
कामिनि, कण्ठ लागि किन राजहि,
तू दामिनि, मोहन नूतन घन।।
कंचुकि सुरंग, विविध रंग सारी,
नख-जुग-ऊन[६] बने तेरे तन।
ये सब उचित नवल मोहन कौं,
श्रीफल कुच, जोवन आगम-धन[७]।।

१- सर्प, २-सैकड़ों चन्द्रों के समान मुख वाली, ३-केला, ४-हंस, ५-सन्ध्या, ६-सोलह श्रृंगार, ७-मिलने की भेंट।

अतिसय[1] प्रीति हुती अन्तर गति,
(जैश्री) हित हरिवंश चली मुकुलित मन।
निविड़[2] निकुञ्ज मिले रससागर,
जीते सत रतिराज सुरत रन॥

(४५)

आवत श्रीवृषभानु दुलारी।
रूप-रासि अति चतुर-सिरोमनि, अंग-अंग सुकुमारी॥
प्रथम उबटि, मज्जन करि, सज्जित नील-बरन तन सारी।
गूँथित अलक, तिलक कृत सुन्दर, सैंदुर माँग सँवारी॥
मृगज[3] समान नैंन अञ्जन जुत, रुचिर रेख अनुसारी[4]।
जटित लवंग ललित नासा पर, दसनावलि कृत कारी[5]॥
श्रीफल उरज, कसूँभी कंचुकि कसि, ऊपर हार छबि न्यारी।
कृस[6] कटि उदर गंभीर नाभिपुट, जघन नितम्बन भारी॥
मनौं मृनाल भूषन भूषित भुज श्याम अंस पर डारी।
(जै श्री) हित हरिवंश जुगल करिनी-गज बिहरत वन पिय-प्यारी॥

(४६)

विपिन घन कुञ्ज रतिकेलि[7] भुज मेलि रुचि,
श्याम-श्यामा मिले सरद की जामिनी।
हृदै अति फूल सम तूल[8] पिय नागरी,
करिनि-करि मत्त मनौं विविध गुन रामिनी[9]॥

१-बहुत अधिक, २-सघन, ३-मृग-छौना, ४-लगी हुई, ५-श्याम, ६-पतली, ७-प्रेम-क्रीड़ा, ८-समान, ९-गुणों से रमणीय बनी हुई।

सरस गति हास-परिहास आवेस बस,

दलित दल मदन-बल कोक रस कामिनी।

(जै श्री) हित हरिवंश सुनि लाल लावन्य भिदे[१],

प्रिया अति सूर सुख सुरत संग्रामिनी॥

(४७)

बन की लीला लालहि भावै।

पत्र-प्रसून[२] बीच प्रतिबिंबहिं, नख-सिख प्रिया जनावै॥

सकुच न सकत प्रगट परिरम्भन, अलि लम्पट दुरि धावै।

संभ्रम देत कुलक कल कामिनि, रति-रण-कलह मचावै॥

उलटी सबै समुझि नैंननि में, अंजन रेख बनावै।

(जै श्री) हितहरिवंश पिरीति रीति बस, सजनी श्याम कहावै॥

(४८)

बनी वृषभानुनन्दिनी आजु।

भूषन-वसन विविध पहिरे तन पिय मोहन हित साजु॥

हाव-भाव लावन्य भृकुटि लट हरत जुवति-जन पाजु[३]।

ताल भेद औघर[४] सुर सूचत नूपुर किंकिनि बाजु[५]॥

नव निकुञ्ज अभिराम श्याम सँग नीकौ बन्यौ समाजु।

(जै श्री) हित हरिवंश विलास-रास जुत जोरी अविचल राजु॥

(४९)

देखि सखी राधा पिय केलि।

ये दोऊ खोरि[६], खिरक गिरि, गहवर,

बिहरत कुँवर कण्ठ भुज मेलि॥

१-लुनाई से बिंध गये, २-पुष्प, ३-गर्व, ४-कठिन, ५-बजाना, ६-गली।

ये दोऊ नवलकिसोर रूप निधि,
विटप[१] तमाल कनक मनौं बेलि।
अधर अदन[२] चुम्बन-परिरम्भन,
तन पुलकित आनँद रस झेलि।।
पट-बन्धन[३] कंचुकि कुच परसत,
कोप कपट निरखत कर पेलि[४]।
(जै श्री) हित हरिवंश लाल रस लंपट,
धाइ[५] धरत उर बीच सकेलि[६]।।

(५०)

नवलनागरि, नवल नागर किसोर मिलि,
कुञ्ज कोमल कमल-दलन सिज्या रची।
गौर-साँवल अंग रुचिर तापर मिले,
सरस मनि नील मनों मृदुल कंचन खची[७]।।
सुरत नीवीनिबन्ध हेतु प्रिय मानिनी,
प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची।
सुभग श्रीफल उरज पानि परसत रोष,
हुंकार गर्व दृग-भङ्गि भामिनी लची[८]।।
कोक कोटिक रभस रहसि हरिवंश हित
विविध कल माधुरी किमपि[९] नाहिन बची।
प्रणयमय[१०] रसिक ललितादि लोचन-चषक,
पिवत मकरंद सुख-रासि अंतर सची[११]।।

१-वृक्ष, २-अधर-खण्डन, ३-रेशम की डोरी, ४-हाथ को हटाकर, ५-आवेश पूर्वक, ६-समेट कर, ७-जड़, गई, ८-झुकी, ९-कुछ भी, १०-प्रेम युक्त, ११-हृदय में संचित कर ली।

(५१)

दान[1] दै री नवल किसोरी।
माँगत लाल लाड़िलौ नागर,
प्रगट भई दिन-दिन की चोरी॥
नव नारंग[2] कनक हीरावलि[3],
विद्रुम सरस[4] जलज मनि[5] गोरी।
पूरित रस पीयूष जुगल घट[6],
कमल[7] कदलि[8] खंजन की जोरी[9]॥
तोपै सकल सौंज[10] दामन[11] की,
कत सतरात[12] कुटिल दृग भोरी।
नूपुर रव[13] किंकिनी पिसुन घर[14],
(जै श्री) हित हरिवंश कहत नहिं थोरी॥

(५२) राग-मलार

देखौ माई, सुन्दरता की सींवाँ[15]।
ब्रज नवतरुनि कदंब नागरी,
निरखि करत अधग्रीवाँ[16]॥
जो कोऊ कोटि कलप लगि जीवै,
रसना कोटिक पावै।

१-राजकर, २-पंक्ति, ३-कनक हीरावली जैसी दन्त पंक्ति, ४-विद्रुम जैसे सरस अधर, ५-मोती जैसी उज्ज्वल मुसकान, ६-अमृत रस से भरे हुए दोनों कुच, ७-कमल जैसा मुख, ८-केला जैसी जंघा, ९-खञ्जन की जोड़ी जैसे नेत्र, १०-सामग्री, ११-बहुमूल्य, १२-चढ़ाती हो, १३-ध्वनि, १४-घर की चुगली खाने वाले, १५-सीमा, १६-नीची गर्दन।

तऊ रुचिर वदनारविंद[१] की,
सोभा कहत न आवै।।
देव-लोक, भू-लोक, रसातल[२],
सुनि कवि-कुल मति डरिये।
सहज माधुरी अङ्ग-अङ्ग की,
कहि कासौं पटतरिये[३]।।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रताप, रूप, गुण,
वय, बल श्याम उजागर[४]।
जाकी भ्रूविलास बस पशुरिव[५],
दिन विथकित[६] रस सागर।।

(५३)

देखौ माई अबला कै बल-रासि[७]।
अति गज मत्त निरंकुस मोहन निरखि बँधे लट-पासि[८]।।
अब ही पंगु[९] भई मन की गति बिनु उद्दिम अनियास[१०]।
तब की कहा कहौं जब पिय प्रति चाहत[११] भृकुटि विलास।।
कचसंजमन[१२] व्याज[१३] भुज दरसत[१४] मुसिकन वदन विकास।
हा-हरिवंश, अनीत रीति हित कत डारत तन त्रास[१५]।।

१-मुख-कमल, २-पाताल, ३-समानता दैं, ४-श्रेष्ठ, ५-साधारण मृग के समान, ६-विवश, ७-अत्यन्त बलवान, ८-केश पाश, ९-शिथिल, १०-बिना प्रयास के, ११-देखती हैं, १२-बालों को बाँधने के, १३-बहाने से, १४-दिखाती हैं, १५-कष्ट।

(५४)

नयौ नेह, नव रंग, नयौ रस, नवल श्याम वृषभानु किसोरी।
नव पीताम्बर, नवल चूनरी, नई-नई बूँदन भीजत गोरी॥
नव वृन्दावन हरित मनोहर नव चातक बोलत मोर-मोरी।
नव मुरली जु मलार नई गति स्रवन सुनत आये घनघोरी[१]॥
नव भूषन नव मुकुट बिराजत नई-नई उरप लेत थोरी-थोरी।
(जै श्री) हितहरिवंश असीस देत मुख चिरजीवौ भूतल यह जोरी॥

(५५)

आजु दोऊ दामिनि मिलि बहसी[२]।
बिच लै[३] श्याम घटा अति नूतन ताके रंग रसी[४]॥
एक चमकि चहुँ ओर सखी री अपने सुभाय लसी[५]।
आई एक सरस गहनी[६] में दुहुँ भुज बीच बसी॥
अम्बुज नील उभय विधु राजत तिनकी चलन खसी[७]।
(जैश्री) हित हरिवंश लोभ भेटन मन पूरन सरद ससी॥

(५६)

हौं बलिजाँऊ नागरी श्याम।
ऐसे ही रंग करौ निसि बासर, वृन्दाविपिन कुटी अभिराम॥
हास विलास सुरत रस सींचन, पशुपति-दग्ध[८] जिवावत[९] काम।
(जैश्री) हित हरिवंश लोल लोचन अलि,
करहु न सफल सकल सुखधाम॥

१-घनघोर घटाएँ उठ आईं, २-होड़ करती हैं, ३-बीच में लेकर, ४-रंग में रँगी, ५-स्वभाव के अनुकूल सुशोभित हुई, ६-भुजबन्धन, ७-शिथिल हो गई, ८-शिवजी द्वारा भस्म किये गये, ९-जीवित करते हैं।

(५७) राग-गौरी

प्रथम यथामति प्रनऊँ[१] श्रीवृन्दावन अति रम्य।
श्रीराधिका कृपा बिनु सबके मनन अगम्य[२]।।
वर यमुनाजल सींचन दिनहीं[३] सरद-बसंत।
विविध भाँति सुमनस[४] के सौरभ अलिकुल मंत[५]।।
अरुन नूत पल्लव[६] पर कूजत कोकिल कीर।
निर्तन करत सिखीकुल[७] अति आनन्द अधीर।।
बहत पवन रुचिदायक सीतल-मन्द-सुगन्धु।
अरुन,नील,सित[८] मुकुलित जहाँ तहाँ पूषन-बंधु[९]।।
अति कमनीय बिराजत मन्दिर नवल निकुञ्ज।
सेवत सगन प्रीतिजुत दिन मीनध्वज-पुञ्ज[१०]।।
रसिक-रासि[११] जहाँ खेलत श्यामा-श्याम किसोर।
उभै-बाहु-परिरंजित[१२] उठे उनींदे भोर।।
कनक कपिस[१३] पट सोभित सुभग साँवरे अंग।
नील वसन कामिनि उर कंचुकी कसूँभी सुरंग।।
ताल रबाब मुरज डफ बाजत मधुर मृदंग।
सरस उकति-गति[१४] सूचत वर बँसुरी मुख चंग।।
दोऊ मिलि चाँचर गावत गौरी राग अलापि[१५]।
मानस-मृग[१६] बल[१७] बेधत[१८] भृकुटि धनुष दृग चाँपि[१९]।।

१-प्रणाम करता हूँ, २-दुरूह, ३-सदैव, ४-पुष्प, ५-मत्त, ६-आम के कोमल पत्ते, ७-मोरों का समूह, ८-सफेद, ९-कमल, १०-कामदेवों के समूह, ११-रसिक शेखर, १२-एक दूसरे की भुजाओं से सुशोभित, १३-स्वर्ण के समान पीला रंग वाला, १४-गान गति, १५-गाकर, १६-मन रूपी मृग, १७-जबर्दस्ती, १८-बेधते हैं, १९-दबाकर।

दोऊ कर तारिनु पटकत लटकत इत उत जात।
हो-हो-होरी बोलत अति आनँद कुलकात।।
रसिक लाल पर मेलत[१] कामिनि बंदनधूरि[२]।
पिय पिचकारिनु छिरकत तकि-तकि कुमकुम पूरि।।
कबहुँ-कबहुँ चन्दन तरु निर्मित तरल हिंडोल।
चढ़ि दोऊ जन झूलत फूलत करत कलोल।।
वर हिंडोल झकोरन कामिनि अधिक डरात।
पुलकि-पुलकि वेपथ अँग प्रीतम उर लपटात।।
हितचिंतक निजचेरिनु उर आनन्द न समात।
निरखि निपट नैंनन सुख तृण तोरत बलि जात।।
अति उदार विवि सुन्दर सुरत सूर सुकुमार।
(जै श्री) हित हरिवंश करौ दिन दोऊ अचल बिहार।।

(५८)

तेरे हित लैन आई, वन तैं श्याम पठाई[३],
हरत कामिनि घन कदन[४] काम कौ।
काहे कौं करत बाधा, सुनिरी चतुर राधा,
भेटि कैं मेटि री माई प्रगट जगत भौ[५]।।
देखिरी रजनी नीकी, रचना रुचिर पी की,
पुलिन नलिन नभ उदित रोहिनी-धौ[६]।
तू तौऽव सखी सयानी, तैं मेरी एकौ न मानी,
हौं तोसौं कहत हारी जुवति जुगति[७] सौं।।

१-डालती हैं, २-गुलाल, ३-भेजी, ४-कष्ट, ५-विरह की दशवीं अवस्था-मरण, ६-चन्द्र, ७-युक्ति पूर्वक।

मोहन लाल छबीलौ, अपने रंग रँगीलौ,
मोहत बिहंग पशु मधुर मुरली रौ[१]।
वे तौव गनत[२] तन जीवन जोवन तव,
जै श्रीहित हरिवंश हरि भजहि भामिनि जौ॥

(५९)

यह जु एक मन बहुत ठौर[३] करि कहि कौनैं सचु[४] पायौ।
जहाँ-तहाँ विपति जार जुवती[५] लौं[६] प्रगट पिंगला[७] गायौ॥
द्वै तुरंग[८] पर जोर[९] चढ़त हठ[१०] परत कौन पै धायौ[११]।
कहि धौं कौन अंक[१२] पर राखै जो गनिका[१३] सुत जायौ॥
(जै श्री) हितहरिवंश प्रपंच बंच[१४] सब काल व्याल[१५] कौ खायौ[१६]।
यह जिय जानि श्याम-श्यामा पद-कमल-संगी[१७] सिर नायौ॥

(६०)

कहा कहौं इन नैंनन की बात।
ये अलि[१८] प्रिया-वदन-अंबुज रस[१९] अटके अनत न जात॥
जब-जब रुकत पलक सम्पुट लट अति आतुर अकुलात।
लंपट लव निमेष अंतर तें अलप[२०] अलप सत सात[२१]॥

१-शब्द, २-मानते हैं, ३-स्थान, ४-सुख, ५-वेश्या, ६-समान, ७-पिंगला वेश्या, ८-घोड़े, ९-जबर्दस्ती, १०-हठ करके, ११-दौड़ा जा सकता है, १२-गोद, १३-वेश्या, १४-मिथ्या, १५-काल रूपी सर्प, १६-भोजन, १७-चरण कमल का भजन करने वाले, १८-भौंरा, १९-मुख कमल के रस में, २०-अल्प, थोड़ा, २१-सात सौ कल्प।

श्रुति[१] पर कंज, दृगंजन[२], कुच बिच मृगमद[३] ह्वै न समात[४]।
(जै श्री) हित हरिवंश नाभि-सर[५]-
जलचर[६] जाँचत[७] साँवल गात[८]।।

(६१)

आजु सखी वन में जु बने प्रभु नाचत हैं ब्रजमंडन[९]।
वैस[१०] किसोर जुवति अंसन पर दिये विमल भुज दंडन।।
कोमल कुटिल अलक सुठि[११] सोभित अवलम्बित[१२] युग गंडन।
मानहुँ मधुप थकित रस-लम्पट[१३] नील कमल के खंडन[१४]।।
हास-विलास हरत सबकौ मन काम समूह विहंडन[१५]।
(जै श्री) हित हरिवंश करत अपनौं
जस प्रगट अखिल[१६] ब्रह्मण्डन[१७]।।

(६२)

खेलत रास दुलहिनी दूलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक,
निरखि-निरखि नैंनन किन फूलहु।।
अति कल मधुर महा मोहन धुनि,
उपजत हंससुता[१८] के कूलहु[१९]।
थेई-थेई वचन मिथुन मुख निसरत[२०],
सुनि-सुनि देह दसा किन भूलहु।।

१-श्रवण, कर्ण, २-नेत्रों में अंजन, ३-कस्तूरी, ४-समाते नहीं, ५-नाभिरूपी सरोवर, ६-मीन, ७-होना चाहते हैं, ८-श्रीश्याम सुन्दर, ९-ब्रज की शोभा, १०-आयु, ११-सुन्दर, १२-आधारित, १३-रस लोभी, १४-दल, १५-नष्ट करने वाले, १६-सम्पूर्ण, १७-ब्रह्माण्ड, १८-श्री यमुनाजी, १९-तट पर, २०-निकलते हैं।

मृदु पदन्यास[१] उठत कुंकुम रज,
अद्भुत बहत समीर दुकूलहु[२]।
कबहुँ श्याम श्यामा दसनांचल[३],
कच-कुच हार छुबत भुजमूलहु॥
अति लावन्य रूप अभिनय गुन,
नाहिन कोटि काम समतूलहु[४]।
भृकुटि विलास हास रस बरसत,
(जै श्री) हितहरिवंश प्रेम रस झूलहु॥

(६३)

मोहन मदन त्रिभंगी। मोहन मुनि-मन-रंगी[५]।
मोहन मुनि सघन प्रगट परमानन्द गुन गम्भीर गुपाला।
सीस किरीट श्रवण मणि कुण्डल उर मंडित[६] बनमाला॥
पीताम्बर तन-धातु[७] विचित्रित कल किंकिनि कटि चंगी[८]।
नख-मनि तरनि[९] चरन सरसीरुह[१०] मोहन मदन त्रिभंगी॥

मोहन बेनु बजावै। इहि रव[११] नारि बुलावै।
आईं ब्रज नारि सुनत वंशी-रव गृह, पति, बंधु बिसारे[१२]।
दरसन मदन गुपाल मनोहर मनसिज ताप निवारे[१३]॥
हरषित वदन, बंक अवलोकन[१४], सरस मधुर धुनि गावै।
मधुमय श्याम समान अधर धरि मोहन बेनु बजावै॥

१-चरणों के रखने से, २-दोनों ओर से आने वाली, ३-अधर, ४-समान ५-मुनियों के मन को रँगने वाले, ६-शोभित, ७- शरीर का वर्ण-श्याम वर्ण ८-भली, सुन्दर, ९-सूर्य, १०-कमल, ११-ध्वनि, १२-भुलादिये, १३-दूर किये, १४-चितवन।

रास रच्यौ वन माँहीं। विमल कलपतरु छाँहीं।
विमल कलपतरु तीर सुपेसल सरद रैन वर चन्दा।
सीतल मन्द-सुगन्ध पवन बहै तहाँ खेलत नंदनन्दा॥
अद्‌भुत ताल मृदंग मनोहर किंकिनि शब्द कराहीं।
यमुना पुलिन रसिक रस-सागर रास रच्यौ वन माँहीं॥

देखत मधुकर केली। मोहे खग, मृग, बेली।
मोहे मृग-धेनु सहित सुर-सुन्दरि[१] प्रेम मगन पट छूटे।
उडुगन चकित, थकित ससि मंडल, कोटि मदन मन लूटे॥
अधर पान परिरम्भन अतिरस, आनँद मगन सहेली।
(जै श्री) हितहरिवंश रसिक सचु पावत देखत मधुकर केली॥

(६४)

बेनु माई बाजै वंशीवट।
सदा बसंत रहत वृन्दावन,
पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट॥
जटित क्रीट, मकराकृत[२] कुण्डल,
मुख अरविन्द भँवर मानौं लट।
दसनन कुंद कली छबि लज्जित,
सज्जित[३] कनक समान पीतपट॥
मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत,
करत विनोद संग बालक भट[४]।
दास अनन्य भजन-रस कारन,
(जै श्री) हितहरिवंश प्रगट लीला नट[५]॥

१-देव लोक की सुन्दरियाँ, २-मकर के आकार वाले, ३-सुशोभित, ४-वीर, ५-नट के समान लीला करने वाले।

(६५)

मदन-मथन[१] घन निकुञ्ज खेलत हरि,
राका रुचिर सरद रजनी।
यमुना पुलिन तट, सुर तरु के निकट,
रचित रास चलि मिलि सजनी।।
बाजत मृदु मृदङ्ग नाचत सबै सुधङ्ग,
तैं न श्रवन सुन्यौ बेनु-बजनी[२]।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रभु राधिका रवन मोकौं,
भावै माई जगत भगत-भजनी[३]।।

(६६) राग-कल्याण

बिहरत दोऊ प्रीतम[४] कुञ्ज।
अनुपम गौर श्याम तन सोभा बन बरसत सुख पुञ्ज।।
अद्भुत खेत[५] महा मनमथ कौ दुंदुभि भूषन-राव[६]।
जूझत सुभट परस्पर अँग-अँग उपजत कोटिक भाव।।
भर संग्राम स्रमित अति अवला निद्रायत[७] कल नैंन।
पिय के अंक निसंक तङ्क[८] तन आलस जुत कृत सैन।।
लालन मिस[९] आतुर पिय परसत उरू[१०] नाभि उरजात[११]।
अद्भुत छटा विलोकि अवनि पर विथकित वेपथ गात।।
नागरि निरखि मदन-विष व्यापत दियो सुधाधर[१२] धीर।
सत्वर[१३] उठे महा मधु पीवत मिलत मीन मिव नीर।।

१-कामदेव के मन को मथने वाला, २-वंशी की ध्वनि, ३-भक्त का भजन करने वाला, ४-श्रीप्रिया प्रियतम, ५-रण भूमि, ६-भूषणों का शब्द, ७-निद्रापूर्ण ८-भय, ९-बहाना, १०-जाँघ, ११-कुच, १२-अधरामृत, १३-शीघ्र।

'अबही मैं मुख मध्य बिलोके बिंबाधर सु रसाल।'
जाग्रत ज्यौं भ्रम भयौ पर्‍यौ मन सत मनसिज कुल जाल॥
'सकृदपि मयि[१] अधरामृत मुपनय[२] सुन्दरि सहज सनेह।
तव पद-पंकज कौ निज मन्दिर पालय सखि! मम देह॥'
प्रिया कहत, 'कहु कहाँ हुते पिय नव-निकुंज-वर-राज।
सुन्दर वचन रचन कत बितरत[३] रति-लंपट बिनु काज॥'
इतनों श्रवन सुनत मानिनि मुख, अंतर[४] रह्यौ न धीर।
मति कातर[५] विरहज दुख व्यापत, बहुतर स्वाँस समीर॥
(जै श्री) हित हरिवंश भुजन आकर्षे लै राखे उर माँझ॥
मिथुन मिलत जु कछुक सुख उपज्यौ त्रुटि-लवमिव[६] भई साँझ॥

(६७)

रुचिर राजत[७] वधू[८] कानन किसोरी।
सरस सोडस[९] किये तिलक मृगमद दिये,
मृगज लोचन[१०] उबटि अंग शिर खोरी॥
गंड पंडीर[११] मंडित[१२], चिकुर चंद्रिका[१३],
मेदिनी कवरि[१४] गूँथित सुरँग[१५] डोरी।
श्रवन ताटंक[१६] कै[१७] चिबुक पर बिंदु दै,
कसूँभी कंचुकि दुरे उरज फल कोरी[१८]॥
बलय कंकन दोत[१९], नखन जावक-जोत,
उदर गुन रेख[२०], पट नील, कटि थोरी।

१-एक बार मुझे, २-प्रदान करें, ३-वितरण करते हैं, कहते हैं, ४-हृदय में, ५-अधीर, ६-क्षण के समान, ७-शोभित, ८-दुलहिन, ९-सोलह श्रृंगार, १०-मृग-छौना जैसे नेत्र, ११-महुवा के पुष्प, १२-शोभित, १३-बालों की चंद्रिका, १४-वेणी, १५-लाल, १६-कर्ण भूषण, १७-धारण करके, १८-किनार, १९-प्रकाश, २०-तीन रेखायें।

सुभग जघनस्थली कुनित[१] किंकिनि भली,
कोक संङ्गीत रस-सिन्धु झकझोरी[२]॥
विविधि लीला रचित रहसि हरिवंश हित,
रसिक सिरमौर राधा रवन जोरी।
भृकुटि निर्जित[३] मदन, मंद सस्मित[४] वदन,
किये रस विवस घनश्याम पिय गोरी॥

(६८)

रास में रसिक मोहन बने भामिनी[५]।
सुभग पावन पुलिन, सरस सौरभ नलिन,
मत्त मधुकर निकर, सरद की जामिनी॥
त्रिविध रोचक[६] पवन, ताप दिनमनि[७] दवन[८],
तहाँ ठाड़े रवन[९] संग सत कामिनी।
ताल बीना मृदंग, सरस नाचत सुधंग,
एक तैं एक सङ्गीत की स्वामिनी॥
राग-रागिनि जमी, विपिन बरसत अमी[१०],
अधर बिंबन रमी मुरलि अभिरामिनी।
लाग कट्टर[११] उरप सप्त सुर सौं सुलप[१२],
लेत सुन्दर सुघर राधिका नामिनी[१३]॥
तत्त थेई-थेई करत गतिव नूतन धरत,
पलटि डगमग ढरत मत्त-गज-गामिनी।

१-बजती हुई, २-डुबाकर निकाली हुई, ३-पराजित, ४-मुस्कराता हुआ, ५-रास में रसिक मोहन और भामिनी (श्रीराधा) शोभित हैं, ६-रुचि उत्पन्न करने वाली, ७-सूर्य, ८-दमन करने वाला, ९-श्रीश्याम सुन्दर, १०- अमृत, ११-तीव्र, १२-अलाप कर, १३-राधिका नाम वाली।

धाइ नवरँग[१] धरी उरसि राजत खरी[२],

(जै श्री) उभै[३] कल हंस हरिवंश घन दामिनी।।

(६९)

मोहनी मोहन रंगे प्रेम सुरंगे,

मत्त मुदित कल नाचत सुधंगे।

सकल-कला प्रवीन, कल्यान रागिनी लीन,

कहत न बनै माधुरी अंग अंगे।।

तरनि-तनया[४] तीर त्रिविध सखी समीर,

मानौं मुनि-व्रत[५] धर्‍यौ, कपोती कोकिला कीर।

नागरि-नवकिशोर, मिथुन मनसि[६] चोर,

सरस गावत दोऊ मंजुल मन्दर घोर।।

कंकन-किंकिन धुनि, मुखर[७] नूपुरन सुनि,

(जै श्री) हित हरिवंश रस बरसै नव तरुनि[८]।।

(७०)

आजु सम्हारत नाहिंन गोरी।

फूली फिरत मत्त करिनी ज्यौं सुरत-समद्र झकोरी।।

आलस बलित[९] अरुन धूसर मखि[१०] प्रगट करत दृग चोरी।

पिय पर करुन अमी रस[११] बरसत, अधर अरुनता[१२] थोरी।।

बाँधत भृङ्ग उरज अम्बुज[१३] पर, अलक निबन्ध किशोरी।

संगम किरच-किरच[१४] कंचुकि बँद, सिथिल भई कटि डोरी।।

१-श्रीश्यामसुन्दर, २-भली प्रकार, ३-दोनों, ४-यमुनाजी, ५-मौन, ६-मन के, ७-बजते हुए, ८-श्रीराधा, ९- आलस्य से घिरे हुए, १०-काजल फैले हुए, ११-करुणारूपी अमृत रस, १२-लाली, १३-कुचकमल, १४-टूक-टूक ।

देत असीस निरखि जुवतीजन, जिनकै प्रीति न थोरी।
(जै श्री) हित हरिवंश विपिन भूतल पर, संतत[१] अविचल[२] जोरी॥

(७१)

श्याम सँग राधिका रासमण्डल बनी।
बीच नँदलाल ब्रज बाल चंपक बरन,
ज्यौंव[३] घन-तड़ित[४] बिच कनक- मर्कतमनी॥
लेत गति मान तत्त थेई हस्तक भेद[५],
स रे ग म प ध नि ये सप्त सुर नादनी।
निर्त्य रस पहिर पट नील प्रगटित छबी,
बदन जनु जलद में मकर की चाँदनी[६]॥
राग-रागिनी तान मान संगीत मत[७],
थकित राकेस[८] नभ सरद की जामिनी।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी[९]
दूरि कृत मदन मद मत्त गजगामिनी॥

(७२) राग-कान्हरौ

सुन्दर पुलिन सुभग सुखदायक।
नव-नव घन अनुराग[१०] परस्पर,
खेलत कुँवर नागरी नायक॥
सीतल हंससुता[११] रस बीचिन[१२],
परसि पवन सीकर[१३] मृदु बरसत।

१-सदैव, २-अटल, ३-जैसे, ४-मेघ और बिजली, ५-हाथ से दिखलाए जाने वाले भाव, ६-चाँदनी, ७-संगीत शास्त्र से सम्मत, ८-चन्द्रमा, ९-सिंह जैसी पतली कमर वाले, १०-सघन प्रेम, ११-यमुनाजी, १२-तरंगें, १३-जलकण।

वर मन्दार[१] कमल चंपक कुल,

सौरभ सरस मिथुन मन हरसत॥

सकल सुधङ्ग विलास परावधि[२],

नाचत नवल मिले सुर गावत।

मृगज मयूर मराल भ्रमर पिक,

अद्‌भुत कोटि मदन सिर नावत[३]॥

निर्मित कुसुम सयन मधु पूरित-

भाजन[४] कनक निकुञ्ज विराजत।

रजनी-मुख[५] सुख-रासि परस्पर,

सुरत समर दोऊ दल साजत॥

विट-कुल-नृपति किसोरी कर धृत[६],

बुधि बल नीबी-बन्धन मोचत[७]।

नेति नेति वचनामृत बोलत,

प्रणय कोप प्रीतम नहिं सोचत॥

(जै श्री) हित हरिवंश रसिक ललितादिक,

लता-भवन रंध्रन[८] अवलोकत।

अनुपम सुख भर भरित विवस असु[९],

आनन्द-वारि[१०] कण्ठ दृग रोकत॥

(७३)

खंजन मीन मृगज मद मेटत कहा कहौं नैंनन की बातैं।

सुनि सुन्दरी कहाँ लौं सिखई मोहन-बसीकरन की घातैं[११]॥

१-कल्प वृक्ष, २-सीमा, ३-झुकाते हैं, ४-पात्र, ५-संध्या, ६-हाथ पकड़ कर, ७-खोलते हैं, ८-छिद्र, ९-प्राण, १०-आनन्द के अश्रु, ११-दाव पेच।

बंक निसंक चपल अनियारे अरुन श्याम सित रचे कहाँ तैं।
डरत न हरत परायौ सर्बसु मृदु मधु मिव मादिक दृग पातैं[१]॥
नैंकु प्रसन्न दृष्टि पूरन करि नहिं मोतन चितयौ[२] प्रमदा तैं।
(जै श्री) हित हरिवंश हंस कल-गामिनि, भावै सो करहु प्रेम के नातैं॥

(७४)

काहे कौं मान बढ़ावत है,
बालक - मृग - लोचनि[३]।
हौं व डरन कछु कहि न सकत,
इक बात सकोचनि[४]॥
मत्त मुरलि अन्तर तब गावत,
जागृत-सैंन तवाकृति[५] सोचन[६]।
(जैश्री) हित हरिवंश महा मोहन पिय,
आतुर विट बिरहज[७] दुख मोचन[८]॥

(७५)

हौं जु कहत इक बात,
सखी सुनि काहे कौं डारत[९]।
प्रान रवन सौं क्यौं व करत,
आगस[१०] बिनु आरत[११]॥

१-कटाक्ष, २-देखा, ३-मृगछौना जैसे नेत्र वाली, ४-संकोच के कारण ५-आपका रूप, ६-ध्यान करते रहते हैं, ७-विरह से उत्पन्न, ८-दूर करने वाली, ९-स्वीकार नहीं करतीं, १०-अपराध, ११-दुखी।

पिय चितवत तव चन्द्रवदन तन,
तू अध मुख[१] निज चरन निहारत[२]।
वे मृदु चिबुक प्रलोय[३] प्रबोधत[४],
तू भामिनि कर सों कर टारत[५]।।
विवस अधीर विरह अति कातर,
सर-औसर[६] कछुवै[७] न बिचारत।
(जै श्री) हित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि,
तृषित नैंन काहे न प्रतिपारत[८]।।

(७६)

नागरी निकुंज ऐन[९] किसलय दल रचित सैन,
कोक-कला-कुसल कुँवरि अति उदार री।
सुरत रंग अंग-अंग हाव-भाव भृकुटि भंग,
माधुरी तरंग मथत कोटि मार री।।
मुखर[१०] नूपुरन सुभाव किंकिनी विचित्र राव,
'विरमि-विरमि'[११] नाथ बदत वर बिहार री।
लाड़िली किसोर राज हंस-हंसिनी समाज,
सींचत हरिवंश नयन सुरस-सार[१२] री।।

(७७)

लटकत फिरत जुवति रस फूली।
लताभवन में सरस सकल निशि,
पिय सँग सुरत-हिंडोरे[१३] झूली।।

१-नीचे को मुख करके, २-देख रही हो, ३-सहला कर, ४-समझाते हैं, ५-हटाती हो, ६-समय-असमय, ७-कुछ भी, ८-पालन करती हो, ९-गृह, १०-शब्दायमान, ११-विराम करें, १२-उज्ज्वल रस का सार, १३-प्रेम-हिंडोले।

जद्यपि अति अनुराग रसासव[१] पान,
बिबस[२] नाहिंन गति भूली।
आलस-वलित[३] नैंन बिगलित[४] लट,
उर पर कछुक कंचुकी खूली[५]॥
मरगजी[६] माल सिथिल कटि बंधन,
चित्रित कज्जल-पीक दुकूली[७]।
(जैश्री) हित हरिवंश मदन-सर जर जर[८],
विथकित श्याम सजीवन मूली[९]॥

(७८)

सुधङ्ग नाँचत नवल किसोरी।
थेई-थेई कहत चहत प्रीतम दिसि,
वदनचन्द्र मनौं त्रिषित चकोरी॥
तान बन्धान मान में नागरि[१०],
देखत श्याम कहत हो-हो री।
(जै श्री) हित हरिवंश माधुरी अँग-अँग,
बरबस[११] लियौ मोहन चित चोरी॥

(७९)

रहसि-रहसि[१२] मोहन पिय के सँग री,
लड़ैती अति रस लटकत।
सरस सुधंग अंग में नागरि,
थेई-थेई कहत अवनि पद पटकत॥

१-रसामृत, २-छकी हुई, ३-आलस्य से घिरे हुए, ४-छूटी हुई, ५-खुली हुई, ६-मसली हुई, ७-वस्त्र, ८-रोम रोम भिदा हुई, ९-जड़ी, १०-चतुर, ११-जबर्दस्ती, १२-एकान्त में।

कोक कलाकुल जानि - सिरोमनि[१],
अभिनय कुटिल भृकुटियन मटकत।
विवस भये प्रीतम अलि लंपट,
निरखि करज-नासापुट[२] चटकत॥
गुन गन रसिक राइ चूड़ामनि,
रिझवत पदिक[३] हार पट झटकत।
(जै श्री) हित हरिवंश निकट दासी जन,
लोचन-चषक रसासव गटकत[४]॥

(८०)

बल्लवी[५] सु कनक-बल्लरी[६] तमाल श्याम संग,
लागि रही अङ्ग-अङ्ग मनोभिरामिनी।
वदन जोत मनौं मयंक, अलक तिलक छबि कलंक[७],
छपत[८] श्याम अंक मनौं जलद दामिनी॥
बिगत-बास[९] हेम खम्भ[१०], मनौं भुवंग बेनी-दंड,
पिय के कण्ठ प्रेम-पुंज कुंज कामिनी।
(जैश्री) शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत आलसवंत
उरज कनक कलस राधिका सुनामिनी॥

(८१) राग-केदारौ

वृषभानुनन्दिनी मधुर कल गावै।
विकट औघर तान चर्चरी ताल सौं,
नन्दनन्दन मनसि मोद उपजावै॥

१-ज्ञाताओं में श्रेष्ठ, २-चुटकी, ३-वक्षस्थल पर धारण होने वाला आभूषण ४-पान करती हैं, ५-ग्वालिन, ६-स्वर्ण-लता, ७-श्याम चिह्न, ८-छिपती हैं, ९-वस्त्र रहित, १०-स्वर्ण स्तम्भ।

प्रथम मज्जन चारु, चीर कज्जल तिलक,
श्रवन कुंडल, वदन चन्द्रन लजावै।
सुभग नक बेसरी[१], रतन हाटक जरी,
अधर बंधूक[२], दसन कुंद चमकावै।।
वलय कंकन चारु, उरसि राजत हारु,
कटिव[३] किंकिनि, चरन नूपुर बजावै।
हंस कल गामिनी, मथत मद कामिनी,
नखन मदयंतिका[४] रंग रुचि द्यावै[५]।।
निर्त सागर रभस, रहसि नागरि नवल,
चन्द्र-चाली[६] विविध भेदन जनावै।
कोक विद्या[७] विदित, भाइ अभिनय निपुन,
भ्रू विलासन मकरकेतन[८] नचावै।।
निविड़[९] कानन भवन, बाहु रंजित रवन[१०],
सरस आलाप[११] सुख पुंज बरसावै।
उभय संगम सिन्धु, सुरत पूषन-बन्धु[१२],
द्रवत[१३] मकरन्द हरिवंश अलि[१४] पावै।।

(८२)

नागरता[१५] की रासि[१६] किसोरी।
नव नागर कुलमौलि[१७] साँवरौ,
बरबस[१८] कियौ चितै मुख मोरी[१९]।

१-नासिका का भूषण, २-दुपहरिया का फूल, ३-कमर में, ४-मँहदी, ५-देती है, ६-नृत्य की एक विशेष चाल, ७-शृंगार कला, ८-कामदेव को, ९-सघन, १०-श्रीराधा की भुजा के द्वारा सुशोभित प्रियतम, ११-रस पूर्ण बातचीत, १२-कमल, १३-झरता है, १४-भ्रमर, १५-चतुरता, १६-समूह, १७-मस्तक, श्रेष्ठ, १८-विवश, १९-मोड़कर, घुमाकर।

रूप रुचिर अँग-अंग माधुरी,
बिनु भूषन भूषित ब्रज गोरी।
छिन-छिन कुसल सुधंग-अंग में,
कोक रभस रस सिंधु झकोरी[१]॥
चंचल रसिक मधुप मोहन मन,
राखे कनक कमल कुच कोरी।
प्रीतम नैंन जुगल खंजन खग,
बाँधे विविध निबन्धन डोरी॥
अवनी उदर नाभि सरसी[२] में,
मनौं कछुक मादिक मधु घोरी।
(जै श्री) हित हरिवंश पिवत सुन्दर वर,
सींव सुदृढ़ निगमन[३] की तोरी॥

(८३)

छाँड़ि दै मानिनी मान मन धरिबौ।
प्रनत[४] सुन्दर सुघर प्रानबल्लभ नवल,
वचन आधीन सौं इतौ कत करिबौ॥
जपत हरि विवस तव नाम प्रतिपद विमल,
मनसि तव ध्यान तैं निमिस[५] नहिं टरिबौ[६]।
घटत पल-पल सुभग सरद की जामिनी,
भामिनी सरस अनुराग दिस ढरिबौ[७]॥
हौं जु कछु कहत निजु बात सुनि मान सखि,
सुमुखि, बिनु काज घन विरह दुख भरिबौ[८]।
मिलत हरिवंश हित कुंज किसलय सयन,
करत कल केलि सुख सिंधु में तरिबौ॥

१-झकोरी हुई, २-सरोवर, ३-वेद, ४-दीन, ५-क्षण भर के लिए भी, ६-हटना, ७-ढुरना चाहिए, ८-अनुभव करना

(८४)

आजु व देखियत है हो प्यारी रङ्ग भरी।
मोपै न दुरत चोरी वृषभानु की किसोरी,
शिथिल कटि की डोरी नंद के लालन सौं सुरत लरी[१]॥
मुतियन लर टूटी चिकुर-चन्द्रिका[२] छूटी,
रहसि रसिक लूटी गंडन[३] पीक परी।
नैंनन आलस बस अधर बिंब निरस,
पुलक प्रेम परस[४] हित हरिवंश री राजत खरी[५]॥

॥ इति श्रीगोस्वामी श्रीहितहरिवंशचन्द्र विरचिता श्रीहित चौरासी समाप्ता ॥



१-प्रेम युद्ध किया, २-केश की बनी चन्द्रिका, ३-कपोल, ४-प्रेम के स्पर्श से, ५-अत्यन्त।

फल स्तुति

छप्पय

भवजल निधि कों नाव काम-पावक कों पानी।
प्रेम भक्ति कौ मूल मोद मंगल सुख दानी।।
निगम सार सिद्धान्त संत विश्राम मधुर वर।
रसिकन कौ रस सार सकल अक्षर रस कौ घर।।
चौरासी हरिवंश कृत पढ़ै सुनै निशि भोर।
छुटि चौरासी भ्रमन तें, निरखै जुगल किसोर।।१।।
निरखै जुगल किसोर भोर अरु रैन न जानै।
पियै रूप रस मत्त भयौ कछु मनहि न आनै।।
प्रेम लक्षना भक्ति होइ हिय आनन्द कारी।
अरु वृन्दावन वास सखी सुख के अधिकारी।।
कुंज महल की टहल सुख दम्पति-सम्पति पाइ है।
(जैश्री) रूपलाल हित प्रीति सौं जो चौरासी गाइहै।।२।।

कवित्त

छै पद विभास माँझ, सात हैं बिलाबल में,
टोड़ी में चतुर, आसावरी में द्वै बने।
सप्त हैं धनाश्री में, जुगल बसंत केलि,
देवगन्धार पंच-दोइ, रस सौं सने।।
सारंग में षोडस हैं, चार ही मलार, एक-
गौड़ में सुहायौ, नव गौरी रस में भने।
षट कल्यान, निधि कान्हरे, केदारे, वेद,
बानी हितजू की सब चौदह राग में गने।।

।। इति श्रीफ़लस्तुति समाप्ता ।।



श्रीहित स्फुट वाणी

(१) *सवैया*

द्वादस[1] चन्द्र, कृतस्थल[2] मंगल, बुद्ध विरुद्ध, सुर-गुरु[3] बंक।
यद्दि दसम्म-भवन्न[4] भृगू-सुत[5], मंद[6] सुकेतु जनम्म के अंक[7]॥
अष्टम राहु, चतुर्थ दिवामणि[8], तौ हरिवंश करत्त न संक।
जो पै कृष्ण-चरण मन अर्पित तौ करि हैं कहा नवग्रह रंक॥

(२) *सवैया*

भानु[9] दसम्म, जनम्म[10] निसापति[11], मंगल-बुद्ध सिवस्थल लीके[12]।
जो गुरु होंय धरम्म-भवन्न के तौ भृगु-नंद सुमंद नवीके[13]॥
तीसरौ केतु समेत बिधु-ग्रस[14] तौ हरिवंश मन-क्रम फीके[15]।
गोविन्द छाँड़ि भ्रमंत दसौं दिस तौ करि हैं का नवग्रह नीके[16]॥

(३) *छप्पय*

नाजानों छिन-अंत कवन[17] बुधि[18] घटहिं[19] प्रकासित।
छुटि चेतन जु अचेत तेऊ मुनि भये बिस-वासित[20]॥
पारासर सुर इन्द्र कलप[21] कामिनि मन फंद्या[22]।
परि व देह दुख-द्वन्द कौन क्रम-काल[23] निकंद्या[24]॥
यहि डरहिडरपि हरिवंश हित जिनव[25] भ्रमहि गुण-सलिल[26] पर।
जिहिं नामन मंगल लोक तिहुँ सु हरि-पद भजु न विलम्ब कर॥

१-बारहवाँ, २-चौथे स्थान में, ३-वृहस्पति, ४-दशम स्थान में, ५-शुक्र, ६-शनि, ७-जन्म स्थान में, ८-सूर्य, ९-सूर्य, १०-जन्म स्थान में, ११-चन्द्र, १२-ग्यारहवाँ स्थान, १३-नवम स्थान, १४-राहु, १५-स्वाद हीन, १६-अच्छे, १७-कौन, १८-बुद्धि, १९-मन में, २०-मोह-ग्रसित, २१-समान, २२-फँसा लिया, २३-काल की गति, २४-छेदन किया, २५-नहीं, २६-त्रिगुण रूपी जल।

(४) *सवैया*

तू बालक नहिं, भर्यौ सयानप[1] काहे कृष्ण भजत नहिं नीके।
अतिव सुमिष्ट तजिव सुरभिन-पय[2] मन बंधत तंदुल-जल[3] फीके।।
(जै श्री) हितहरिवंश नर्कगतिदुरभर[4] यमद्वारे कटियत नकछींके[5]।
भव-अज[6] कठिन, मुनीजन दुर्लभ, पावत क्यों जु मनुज तन भीके[7]।।

(५) *कुण्डलिया*

चकई प्राण जु घट रहैं पिय बिछुरंत निकज्ज[8]।
सर-अन्तर[9] अरु काल-निशि तरफ तेज[10] घन गज्ज[11]।।
तरफ तेज घन गज्ज लज्ज तुहि वदन न आवै।
जल-विहून[12] करि नैंन भोर किहिं भाय[13] बतावै।।
(जै श्री) हित हरिवंश विचारि बाद अस कौन जु बकई।
सारस यह सन्देह प्राण घट रहैं जु चकई।।

(६) *कुण्डलिया*

सारस सर-बिछुरंत कौ जो पल सहय सरीर।
अगिन-अनंग[14] जु तिय[15] भखै[16] तौ जानै पर-पीर।।
तौ जानै पर-पीर धीर धरि सकहि वज्र-तन[17]।
मरत सारसहि फूट[18] पुनि न परचौ[19] जु लहत मन।।
(जै श्री) हित हरिवंश विचारि प्रेम विरहा बिन वा रस[20]।
निकट कंत नित रहत मरम कह जानै सारस।।

१-चतुराई, २-गाय का दूध, ३-चाँवल का पानी, ४-कठिन, ५-छींकने पर नाक काटी जाती है, ६-शिव और ब्रह्मा, ७-भीख माँगने पर, ८-निरर्थक, ९-सरोवर का अन्तर, १०-बिजली, ११-गर्जना, १२-आंसू के बिना, १३-भाव, १४-काम की अग्नि, १५-सारस की पत्नी, १६-खाय, अनुभव करें, १७-बज्र जैसा कठोर शरीर, १८-बिछुड़ना, १९-अनुभव, २०-विरह के बिना रस की स्थिति।

(७) *छप्पय*

तैं भाजन[१] कृत जटित[२] विमल चन्दन कृत इन्धन[३]।
अमृत पूरि तिहि मध्य करत सरषप-खल[४] रिंधन[५]॥
अद्‌भुत धर[६] पर करत कष्ट कंचन-हल वाहत[७]।
बार[८] करत पाँवार[९] मन्द बोवन विष चाहत॥
(जै श्री) हित हरिवंश विचारिकै मनुज-देह गुरु-चरण गहि।
सकहि तौ सब परपंच तजि कृष्ण-कृष्ण गोविन्द कहि॥

(८) *सवैया*

तातैं भैया मेरी सौं कृष्ण-गुण संचु[१०]।
कुत्सित वाद[११] विकारहिं परधन सुन सिख मंद परतिय बंचु[१२]।
मणिगण-पुञ्ज व्रजपति छाँड़त हित हरिवंश कर गहि कंचु[१३]॥
पाये जान जगत में सब जन कपटी कुटिल कलियुग-टंचु[१४]।
इहि-परलोक सकल सुख पावत मेरी सौं कृष्ण-गुण संचु॥

(९) *अरिल्ल*

मानुष कौ तन पाय भजौ व्रजनाथ कौं।
दर्बी[१५] लैकैं मूढ़ जरावत हाथ कौं॥
(जै श्री) हित हरिवंश प्रपंच विषय-रस मोहके।
हरि हाँ, बिन कंचन क्यौं चलैं पचीसा[१६] लोहके॥

(१०) *राग बिलावल*

तू रति रंगभरी देखियत है री राधे, रहसि[१७] रमी मोहन सौं व रैन।
गति अति सिथिल, प्रगट पलटे पट, गौर अंग पर राजत अैन[१८]॥

१-पात्र, २-जड़ाऊँ, ३-ईधन, ४-सरसों की खली, ५-राँधना, ६-पृथ्वी, ७-चलाता है, ८-बाड़, ९-प्रवाल, मूंगा, १०-संचय करो, ११-विवाद, १२-छोड़ दे, १३-काँच, १४-प्रभावित, १५-कलछी, १६-सिक्का, १७-एकान्त में, १८-भली प्रकार।

जलज[१] कपोल, ललित लटकत लट, भृकुटि कुटिल ज्यौं धनुषधृतमैन[२]।
सुन्दरि रहव[३] कँहव[४] कंचुकि, कत[५] कनक कलस कुच बिचनखदैन[६]॥
अधर बिंब दलमलित, आरसयुत[७] अरु आनन्द सूचत सखि नैन।
(जै श्री) हितहरिवंशदुरत[८] नहिंनागरि, नागरमधुप मथित सुखसैन॥

(११) राग विलावल

आनँद आजु नन्द के द्वार।
दास अनन्य[९] भजन-रस कारन प्रगटे लाल मनोहर ग्वार॥
चन्दन सकल धेनु तन मंडित-कुसुम-दाम[१०] सोभित आगार[११]।
पूरन कुम्भ बने तोरन[१२] पर बीच रुचिर पीपर की डार॥
युवति यूथ मिल गोप विराजत बाजत पणव मृदंग सुतार।
(जै श्री) हितहरिवंश अजिर वर[१३] बीथिनु-
दधि-मधि-दूध हरद के खार[१४]॥

(१२) *राग धनाश्री*

मोहनलाल के रँग राँची[१५]।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ बात दसों-दिस माँची[१६]॥
कंत अनंत करौ जो कोऊ बात कहौं सुन साँची।
यह जिय जाहु भलै सिर ऊपर, हौं व प्रगट ह्वै नाँची॥
जाग्रत-सयन रहत उर ऊपर मणि कंचन ज्यौं पाँची[१७]।
(जै श्री) हित हरिवंश डरों काके डर हौं नाहिन मति काँची॥

(१३)

मैं जु मोहन[१८] सुन्यौ वेणु गोपाल कौ।
व्योम[१९] मुनियान[२०], सुर-नारि विथकित भईं,
कहत नहिं बनत कछु भेद यति-ताल[२१] कौ॥

१-कमल, २-कामदेव, ३-ठहरो, ४-कहाँ है, ५-क्यों, ६-नख चिह्न, ७-आलस्य युक्त, ८-छिपाना, ९-अनन्य दास, १०-फूलों की माला, ११-घर, १२-द्वार, १३-आँगन, १४-गढ़े, १५-रँगी हुई, १६-फैल गई, १७-जड़ी हुई, १८-मोहित करने वाला, १९-आकाश, २०-विमान, २१-गान की गति का उतार-चढ़ाव।

स्रवन कुण्डल छुरित[१], रुरत[२] कुन्तल[३] ललित,
रुचिर कस्तूरि चन्दन तिलक भाल कौ।
चंद गति मंद भई, निरखि छबि काम गई,
देखि हरिवंश हित वेष नन्दलाल कौ॥

(१४) पद

आज तू ग्वाल गोपाल सौं खेलि री।
छाँड़ि अति मान, बन चपल चलि भामिनी,
तरु तमाल सों अरुझ कनक की बेलि री।
सुभट सुन्दर ललन, ताप परबल[४] दमन,
तू व ललना रसिक काम की केलि री।
वेणु कानन कुनित[५], स्रवन सुन्दरि सुनत,
मुक्ति सम सकल सुख पाय पग पेलि री॥
विरह-व्याकुल नाथ गान गुन युवति तब,
निरखि मुख काम कौ कदन[६] अवहेलि री[७]।
सुनत हरिवंश हित, मिलत राधारवन,
कंठ भुज मेलि, सुख-सिंधु में झेलि[८] री॥

(१५)

वृषभानु नन्दिनी राजत हैं।
सुरत-रङ्ग-रस भरी भामिनी,
सकल नारि सिर गाजत[९] हैं।
इत-उत चलत, परत दोऊ पग,
मद-गयंद[१०] गति लाजत हैं॥

१-प्रकाशित, २-लटक रही है, ३-बालों की लट, ४-प्रबल, ५-बजना, ६-वेदना, ७-मिटाइये, ८-निमज्जन करें, ९-सुशोभित हैं, १०-मत्त हाथी।

अधर निरंग[१], रंग गंडन[२] पर,
कटक[३] काम कौ साजत हैं॥
उर पर लटक रही लट कारी[४],
कटिव किंकिनी बाजत हैं।
(जै श्री) हित हरिवंश पलटि प्रीतम पट,
जुवति जुगति सब छाजत[५] हैं॥

(१६) पद

चलौ वृषभानु गोप के द्वार।
जन्म लियौ मोहन हित श्यामा,
आनन्द-निधि सुकुमार॥
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल,
उच्च मधुर धुनि-धार।
विविध कुसुम किसलय कोमल दल,
सोभित बन्दन बार॥
विदित[६] वेद-विधि[७] विहित[८] विप्रवर,
करि स्वस्तिनु[९] उच्चार।
मृदुल मृदंग मुरज भ्रेरी डफ,
दिवि[१०] दुंदुभि रवकार[११]॥
मागध सूत बन्दी चारन जस,
कहत पुकारि-पुकारि।
हाटक[१२] हीर चीर पाटम्बर[१३],
देत सम्हारि-सम्हारि॥

१-रंग हीन, २-कपोल, ३-सेना, ४-काली लट, ५-शोभा देती हैं, ६-प्रसिद्ध, ७-वैदिक क्रिया, ८-सम्पन्न की, ९-आशीर्वादात्मक मन्त्र, १०-आकाश में, ११-शब्द, १२-स्वर्ण, १३-रेशमी वस्त्र,

चन्दन सकल धेनु-तन मण्डित,
चले जु ग्वाल सिंगारि।
(जै श्री) हितहरिवंश दुग्ध-दधि छिरकत,
मध्य हरिद्रा गारि[१]॥

(१७) रागगौरी

तेरौई ध्यान राधिका प्यारी गोवर्द्धन धर लालहिं।
कनक लता सी क्यों न विराजत अरुझी श्याम तमालहिं॥
गौरी गान सु तान ताल गहि रिझवत क्यों न गुपालहिं।
यह जोवन कंचन तन ग्वालिन सफल होत इहि कालहिं॥
मेरे कहे विलंब न करि सखि, भूरि भाग[१] अति भालहिं।
(जै श्री) हितहरिवंश उचित हौं चाहत श्याम कंठ की मालहिं॥

(१८) पद

आरती मदन गोपाल की कीजियै।
देव, ऋषि, व्यास, शुकदास सब कहत निज,
क्यों न बिन कष्ट रस-सिन्धु कौं पीजियै॥
अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित–
नव वर्तिका धृत सों पूरि राखौ।
कुसुम कृत माल नँदलाल के भाल पर,
तिलक करि प्रगट यश क्यों न भाखौ॥
भोग प्रभु योग भरि थार धरि कृष्ण पै,
मुदित भुज दण्डवर चमर ढारौ।
आचमन पान हित मिलत कर्पूर जल,
सुभग मुख वास, कुल ताप जारौ॥

१-हलदी डालकर, २-महाभाग्य, [१८]पान हित=पीने के लिए, योग=योग्य, कुल ताप=अपने सम्पूर्ण वंश का ताप, दाय=अवसर, याँचौ=याचना करो।

शंख दुंदुभि पणव घंट कल वेणु रव,
झल्लरी सहित स्वर सप्त नाँचौ।
मनुज तन पाय यह दाय ब्रजराज भज,
सुखद हरिवंश प्रभु क्यौं न याँचौ।।

(१९)

आरती कीजै श्याम सुन्दर की।
नन्द के नन्दन राधिका वर की।।
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती।
साधु संगति करि अनुदिन राती।।
आरती जुवति यूथ मन भावै।
श्याम लीला (श्री) हरिवंश हित गावै।।

(२०) *राग गौरी*

रहौ कोऊ काहू मनहिं दिये।
मेरे प्राण नाथ श्रीश्यामा सपथ करौं तृण छिये[१]।।
जे अवतार कदम्ब[२] भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हिये।
तेऊ उमगि तजत मर्यादा, बन बिहार रस पिये।।
खोये रतन फिरत जे घर-घर कौन काज ऐसे जिये।
(जै श्री) हितहरिवंश अनत[३] सचु[४] नाहीं बिन या रजहिं लिये[५]।।

(२१) *राग कल्याण*

हरि रसना राधा-राधा रट।
अति अधीन आतुर यद्यपि पिय कहियत है नागर नट।।
संभ्रम[१] द्रुम[२], परिरंभन[३] कुञ्जन, दूँढ़त कालिन्दी तट।

---

[१९]-अनुदिन राती-प्रतिदिन प्रकाशित, १-दृढ़ता के साथ, २-समूह, ३-अन्य स्थान में, ४-सुख, ५-श्रीवृन्दावन की रज।

विलपत, हँसत, विषीदत[४] स्वेदत[५] सतु[६] सींचत अँसुवन वंशीवट॥
अंगराग, परिधान वसन[७], लागत ताते[८] जु पीत पट।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रसंसत श्यामा दै प्यारी कंचन घट॥

(२२)

लाल की रूप माधुरी नैंनन निरख नेकु सखी।
मनसिज[९] मन हरन हास[१०], साँवरौ सुकुमार रासि,
नख सिख अङ्ग अङ्गन उमँगि, सौभग सींव[११] नखी[१२]॥
रँगमगी सिर सुरँग[१३] पाग, लटकि रही वाम भाग,
चंप कली कुटिल अलक बीच-बीच रखी।
आयत दृग[१४] अरुण लोल[१५], कुण्डल मण्डित[१६] कपोल,
अधर दसन दीपति[१७] की छवि, क्यों हू न जात लखी॥
अभयद[१८] भुज दण्ड मूल, पीन[१९] अंस[२०] सानुकूल,
कनक निकष[२१] लसिं दुकूल, दामिनी धरखी[२२]।
उर पर मंदार[२३] हार, मुक्ता लर वर सुढार,
मत्त दुरद गति, तियन की देह दसा करखी[२४]॥
मुकुलित वय[२५] नव किसोर, वचन रचन चित के चोर,
मधु रितु पिक शाव[२६] नूत मंजरी[२७] चखी।
(जै श्री) नटवत[१] हरिवंश गान, रागिनी कल्यान तान,

१-भ्रम में पड़ना, २-वृक्ष, ३-आलिंगन, ४-दुखित होना, ५-पसीना आना, ६-और वे, ७-पहिनने के कपड़े, ८-गरम, ९-कामदेव, १०-हँसी, ११-सुन्दरता की सीमा, १२-पार कर दी है, १३-लाल, १४-बड़े-बड़े नेत्र, १५-चंचल, १६-सुशोभित, १७-प्रकाश, १८-अभय देने वाले, १९-पुष्ट, २०-कन्धे, २१-कसौटी, २२-दव गई, २३-स्वर्गीय वृक्ष के फूल, २४-उत्तेजित कर दी, २५-उठती हुई अवस्था, २६-कोयल का बच्चा, २७-आम की मंजरी।

(जै श्री) नटवत[1] हरिवंश गान, रागिनी कल्यान तान,
सप्त स्वरन कल[2], इते पर मुरलिका बरखी[3]॥

(२३) *राग-मलार*

दोऊ जन भीजत अटके बातन।
सघन कुञ्ज के द्वारे ठाड़े अम्बर[4] लपटे गातन॥
ललिता ललित रूप रस भींजी बूँद बचावत पातन[5]।
(जै श्री) हित हरिवंश परस्पर प्रीतम मिलवत रति रस घातन॥

दोहा

सबसौं हित, निष्काम मति[6], वृन्दावन विश्राम[7]।
श्रीराधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान, मुख नाम॥१॥
तनहिं राखि सतसंग में, मनहिं प्रेम रस भेव[8]।
सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण कल्प तरु सेव[9]।२॥
निकसि कुञ्ज ठाड़े भये, भुजा परस्पर अंस।
श्रीराधावल्लभ मुख कमल, निरख नैंन हरिवंश॥३॥
रसना कटौ जु अन[10] रटौं, निरखि अनफुटौ, नैंन।
श्रवण फुटौ जो अनसुनौं, श्री राधा यश बैन॥४॥



१-भाव दिखाना, २-मधुर, ३-स्वरों की वर्षा की, ४-स्वर, ५-पत्तों के द्वारा, ६-कामना रहित बुद्धि, ७-परम सुख, ८-भिगोये रखो, ९-सेबन करो, १०-बिना।